UNIVERSAL LIBRARY

OU_182570

UNIVERSAL LIBRARY

Osmania University Library

Call No. H82 S52E

Accession No. H2623

Author शेक्सपियर

Title मुक्त सपना

This book should be returned on or before the date last marked below.

हिन्दी शेक्सपियर

एक सपना

शेक्सपियर

अनुवादक: डा० रांगेय राघव

आत्माराम एन्ड संस
प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता
काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

जपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

मूल्य : दो रुपये (२.००)
प्रथम संस्करण : दिसम्बर, १९५७
प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली
मुद्रक : हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली

शेक्सपियर विश्व-साहित्य के गौरव, अंग्रेजी भाषा के अद्वितीय नाटककार शेक्सपियर का जन्म २६ अप्रैल, १५६४ ई० में स्ट्रैटफोर्ड-आन्-ऐवोन नामक स्थान में हुआ। उसकी बाल्यावस्था के विषय में बहुत कम ज्ञात है। उसका पिता एक किसान का पुत्र था, जिसने अपने पुत्र की शिक्षा का अच्छा प्रबन्ध भी नहीं किया। १५८२ ई० में शेक्सपियर का विवाह अपने से आठ वर्ष बड़ी ऐनहैथवे से हुआ और सम्भवतः उसका पारिवारिक जीवन सन्तोषजनक नहीं था। महारानी ऐलिज़ाबेथ के शासनकाल में १५८७ ई० में शेक्सपियर लन्दन जाकर नाटक कम्पनियों में काम करने लगा। हमारे जायसी, सूर और तुलसी का प्रायः समकालीन यह कवि यहीं आकर यशस्वी हुआ और उसने अनेक नाटक लिखे, जिनसे उसने धन और यश दोनों कमाये। १६१२ ई० में उसने लिखना छोड़ दिया और अपने जन्मस्थान को लौट गया और शेष जीवन उसने समृद्धि तथा सम्मान से बिताया। १६१६ ई० में उसका स्वर्गवास हुआ।

इस महान् नाटककार ने जीवन के इतने पहलुओं को इतनी गहराई से चित्रित किया है कि वह विश्व-साहित्य में अपना सानी सहज ही नहीं पाता। मारलो तथा बेन जानसन जैसे उसके समकालीन कवि उसका उपहास करते रहे, किन्तु वे तो लुप्त-प्रायः हो गये, और यह कविकुल-दिवाकर आज भी देदीप्यमान है।

शेक्सपियर ने लगभग ३६ नाटक लिखे हैं, कविताएँ अलग।

उसके कुछ प्रसिद्ध नाटक हैं—जूलियस सीज़र, ऑथेलो, मैकबैथ, हैमलेट, लियर, रोमियो जूलियट (दुःखान्त); एक सपना (ए मिड समर नाइट्स ड्रीम), वेनिस का सौदागर, बारहवीं रात, तिल का ताड़ (मच एड्‌ू अबाउट नथिंग), जैसा तुम चाहो (एज़ यू लाइक इट), तूफ़ान (सुखान्त)। इनके अतिरिक्त ऐतिहासिक नाटक हैं तथा प्रहसन भी हैं। प्रायः उसके सभी नाटक प्रसिद्ध हैं।

शेक्सपियर ने मानव-जीवन की शाश्वत भावनाओं को बड़े ही कुशल कलाकार की भाँति चित्रित किया है। उसके पात्र आज भी जीवित दिखाई देते हैं। जिस भाषा में शेक्सपियर के नाटकों का अनुवाद नहीं है वह भाषाओं में कभी नहीं गिनी जा सकती।

भूमिका

एक सपना (ए मिड समर नाइट्स ड्रीम) शेक्सपियर का एक अत्यंत प्रसिद्ध गीतात्मक सुखांत नाटक है। यह उसके रचनाकाल में पहले निर्माणयुग के अंतर्गत आता है। इसी युग में उसने 'लव्स लेबर्स लॉस्ट', 'टू जेन्टलमैन आफ़ वेरोना', 'कॉमेडी ऑफ एरर्स' इत्यादि नाटक लिखे थे। 'रोमियो एण्ड जूलियट' उसका प्रसिद्ध दुःखांत नाटक भी इसी काल में आता है।

इसका कथानक वन देवता, परियों इत्यादि को ले कर चलता है। इसमें प्राचीन ग्रीस के पात्र हैं, तथा निम्नवर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले अभिनेता हैं, जिनमें बौटम है, जो शेक्सपियर का एक प्रसिद्ध पात्र है।

इस नाटक में प्रकृति का बड़ा ही सुंदर चित्रण हुआ है। झरने, फूल, छाया और ज्योत्स्ना का मनोहर वर्णन है। इसके अतिरिक्त इसका मुख्य विवेच्य प्रेम है और प्रेम भी बड़ी चुभन वाला, किंतु वह अवसाद को नहीं, सुख की प्राप्ति को प्रस्तुत करता है। ऐसा लगता है जैसे कोई कल-कल निनाद करता हुआ झरना बह रहा हो।

यद्यपि शेक्सपियर के आलोचक उसके 'बारहवीं रात' नामक सुखांत नाटक को अधिक परिपक्व मानते हैं, परंतु मुझे यही अच्छा लगता है, क्योंकि इसमें शेक्सपियर अधमकाव्यत्व की ओर नहीं प्रेरित हुआ, शब्दों का जाल यहाँ नहीं के बराबर है। हास्य तो इसमें इतना सशक्त है कि शेक्सपियर की मेधा को देख कर हृदय आप्लावित हो जाता है। यहाँ 'पक' अलौकिक होते हुए भी एरियल की भाँति दिव्यत्व को

प्राप्त नहीं करता, अतः वह हमें गुदगुदाता रहता है ।

मनुष्य के प्रेम, उसके लौकिक व्यवहार की मूर्खता को कवि ने ऐसा उभार कर रखा है कि पढ़ते-पढ़ते तबियत लोट-पोट हो जाती है और जब बौटम गधे का सिर लिये टिटानिया के प्रेम का पात्र बनता है, तब तो देखने योग्य दृश्य बन जाता है । शेक्सपियर के युग में दृश्य नहीं होता था, उसकी कल्पना की जाती थी । किंतु यदि अब भी इस नाटक को खेला जाय तो अधिक बाह्य उपकरणों की आवश्यकता नहीं पड़ेगी और नाटक बहुत रोचक बन सकेगा । अपने से पूर्वकाल के नाटक पर शेक्सपियर ने बड़ा ही मीठा व्यंग कसा है । अमर और मर्त्यों का वह संयोग यहाँ ऐसा सहज बन बैठा है कि उसमें अस्वाभाविक भी अस्वाभाविक-सा नहीं लगता, क्योंकि घटना का आकर्षण हमें जड़ यथार्थ से ऊपर उठा कर उधर ले जाता है, जिधर लेखक ने आनंद की सृष्टि की है । इसमें हम दैवी और पार्थिव व्यापकत्व का एक-सा सम्मिश्रण प्राप्त करते हैं और प्रेम सबमें हमें समान दिखाई देता है । ड्रायडन ने शेक्सपियर के इसी अलौकिक की सहजता की प्रशंसा की है ।

अनुवाद करते समय अनुभव किया कि अपने अन्य अनुवादों की भाँति यदि मैं इसका भी गद्यानुवाद कर दूँ तो शेक्सपियर का उचित प्रतिनिधित्व नहीं हो सकेगा । इसीलिये शेक्सपियर ने जहाँ गद्य का प्रयोग किया है, वहाँ मैंने गद्य में अनुवाद किया है और जहाँ उसने पद्य का आश्रय लिया है, वहाँ मैंने भी पद्य को ही स्थान दिया है । मेरे मित्रों की राय यह है कि यह अनुवाद शेक्सपियर के लालित्य और प्रसाद को भी उतार ला सकने में समर्थ हुआ है; बाकी स्वयं पाठक इसका

अंतिम निर्णय दे सकेंगे। पद्यानुवाद-भाग को कथोपकथन की दृष्टि से रखा गया है। पद्य होते हुए भी उसे गद्य के रूप में वैसे ही बोला जा सकता है, जैसे शेक्सपियर का पद्य। कहीं-कहीं किसी पुरानी कथा का संदर्भ ऐसा आ गया है, जो हिंदी की गति में दुरूहता उपस्थित करने वाला प्रमाणित हुआ। मैंने उसे थोड़ा बदल दिया है, भावात्मक अनुवाद का प्रश्रय लेकर। और नीचे फुटनोट में मूल का उल्लेख कर दिया है।

कुछ लोगों का मत है कि शेक्सपियर ने यहाँ निम्नवर्ग का मज़ाक उड़ाया है, तभी बढ़ई, लुहार, बुनकर, ठठेरा इत्यादि को उपहासास्पद चित्रित किया है। वस्तुतः ऐसा नहीं है। कवि ने नाटक के पुराने अभावों की ओर ध्यान आकर्षित किया है और अपने नाटक संबंधी उद्‌गारों को थीसियस के मुख से कहलवाया भी है, जिनका बहुत बड़ा महत्त्व है। जीवन की मूल विवेचना का जहाँ तक प्रश्न है, शेक्सपियर इस रचना में भी पीछे नहीं रहा है, यही कारण है कि प्रायः उसकी अधिकांश रचनाओं में विशेषता उसकी अपनी ही बनी रहती-सी मिल जाती है।

मनुष्य के पार्थिव का जो महत्त्व कवि ने उसके सारे हल्केपन के साथ यहाँ प्रस्तुत किया है, ऐसा अन्यत्र मिलना काफ़ी कठिन है। रोमान्टिक कवियों में जो कल्पना का आनंद आगे हमें अंगरेज़ी साहित्य में बढ़ता हुआ मिलता है, शेक्सपियर में हमें उसका एक अन्य ही रूप दिखाई दे जाता है।

—रांगेय राघव

पात्र-परिचय

थीसियस	: एथेन्स का ड्यूक
एजियस	: हर्मिया का पिता
लाइसैन्डर डेमेट्रियस	: हर्मिया के प्रेमी
फाइलोस्ट्रेट	: थीसियस के आनंदोत्सव का प्रबंधक
क्विन्स	: एक बढ़ई
स्नग	: लुहार
बौटम	: एक बुनकर
फ्लूट	: धौंकनी बनाने वाला
स्नाउट	: ठठेरा
स्टारवेलिंग	: एक दर्ज़ी
हिप्पोलिटा	: एमेज़ौन लोगों की रानी, थीसियस से इसका विवाह होने वाला है
हर्मिया	: एजियस की पुत्री, लाइसैन्डर से प्रेम करती
हेलेना	: डेमेट्रियस से प्रेम करती है
ओबेरोन	: परियों का राजा
टिटानिया	: परियों की रानी
पक	
पीज़ब्लौसम (मटर का फूल)[1] कौबवैब (जाला) मौथ (पतंगा) मस्टर्डसीड (सरसों का बीज)	} परियाँ

अन्य सेवक तथा परियाँ आदि

---

१. इन शब्दों का भावार्थ । पाठक को कल्पना का रूप देखना चाहिये ।

पहला अंक

दृश्य १

[एथेन्स, थीसियस का प्रासाद]

[थीसियस, हिप्पोलिटा, फाइलोस्ट्रैट तथा सेवकों का प्रवेश]

थीसियस : आह सुंदरी हिप्पोलिटा ! आ रहा देखो
वह क्षण धीरे धीरे कितना पास हमारे
जब हम तुम मिल जायेंगे, फिर एक बनेंगे !
करवट बदलें चार दिवस बस यही प्रतीक्षा,
चौथे दिन का चंद्र नया जीवन लायेगा,
मिटती है यह क्षीण क्षीणतर होती होती
सद्य चंद्रिका, तरुण विकल प्रेमी के मन को
छीज छीज कर काट रही सी जैसे कोई
विधवा अपना हृदय शीतले भाव रहित हो !

हिप्पोलिटा : चार दिवस तो अंधियाली रातों के गहरे
गह्वर में जा
खो जायेंगे, और चार राते सुपनों में
बहला देंगी काल व्याप्ति को ।
और चंद्रमा नया, गगन में बन चाँदी का
झुका हुआ धनु, होगा उदित हमारे आनंदों का
बनने सुदर साक्षी

थीसियस : जाओ ! फाइलोस्ट्रैट ! जगा दो,
तुम एथेन्स नगर के सारे तरुण जनों को

होने दो आनंद और मंगल के उत्सव !
सुख विलास की कोमल चेतनता को जा कर
आज जगा दो !
अरे मरण के नील अंक में खो जाने दो
जो विषाद की पीड़ा में व्याकुल रहते हैं।
अपने इस आमोद मुखर में शिथिल प्राण का संग
न होगा।

[फाइलोस्ट्रेट का प्रस्थान]

[एजियस, हर्मिया, लाइसैन्डर और डेमेट्रियस का प्रवेश]

एजियस : जय ! थीसियस तुम्हारी जय हो, अहे
यशस्वी ड्यूक हमारे !

थीसियस : स्वागत, धन्यवाद हे सज्जन, श्रेष्ठ एजियस,
क्या संवाद सुघर लाये हो तुम हित मेरे ?

एजियस : आह ! विकल विक्षुब्ध हृदय हो मैं आया हूँ ।
मेरी पुत्री, मेरी ही बालिका हर्मिया, लक्ष्य बनी है
मेरे इस अंगारक क्रोधानल का सचमुच,
डेमेट्रियस ! इधर आओ तुम !
हे कुलीन शासक मेरे ! यह सुनें एक क्षण !
यह ही है वह व्यक्ति चाहता हूँ मैं जिससे
परिणय कर ले मेरी पुत्री !
लाइसैन्डर ! तुम इधर खड़े हो !
हे दयालु शासक प्रवीर ! यह विनय सुनें अब,
यही व्यक्ति है जिसने मेरी कोमल दुहिता
पर फैलाया अपना भीषण इंद्रजाल है
ओ लाइसैन्डर ! तूने, तूने·····

गीत सुनाये इस चपला को और प्रेम के
उपहारों को इससे पाया, इसको तूने बहुत
भेंट दी है बहला कर।
और चाँदनी रातों में तूने ही इसके शयन कक्ष के
वातायन के नीचे आकर गीत सुनाये करुण कंठ से,
प्रेम, सुबकती तृष्णा बन कर बह-बह जिनसे
भिगो गया मन।
अपने केशपाश की घुँघराली छवियों से,
छल, चतुराई, मुद्रा, दूतों और मिठाई
आदि अनेकों चालों का करके प्रयोग ही
तूने इसके अपरिपक्व यौवन में इसके चपल हृदय को
जीत लिया है !
तेरी छलमय दृढ़ता इसके इस अनजाने चपल मनस को
हिला गई है।
तूने ये षड़यंत्र गहन कैसा फैलाया !
मेरी पुत्री मुझसे ही विद्रोह कर रही ?
मैंने उसे विनीत बनाया था पर तूने
उसकी वाणी में यह ऐसे शूल भर दिये !
हे कुलीन शासक यह देखें !
यदि यह कन्या करती है स्वीकार नहीं अब
डेमेट्रियस वीर से अपना परिणय करना,
यहाँ सामने हे दयालु प्रभु ! स्वयं आपके,
तो एथेन्स का वही पुरातन न्याय माँगता हूँ मैं इस क्षण,
यह मेरी है, मैं इसका कुछ भी कर सकता।
या तो यह स्वीकार करे यह तरुण, जिसे मैंने स्वीकारा,

या फिर मुख में जाये निश्चय आज मृत्यु के,
अपना जो हो नियम न्याय बस वही चाहता हूँ लागू हो,
हे दयालु शासक केवल मेरी है यह ही विनय एक बस ।

थीसियस : कहो हर्मिया ! कुछ कहना है ? सुघर बालिके !
समझो यदि कोई समझाये ।
अरे पिता है स्वयं देवता हेतु तुम्हारे ।
वह ही है निर्माता, सर्जक सकल रूप का
औ' आकृति का किंतु तुम्हारी !
उसके लिये मोम की पुतली हो तुम देखो,
वह चाहे तो भले मिटा दे तुम्हें, बना दे ।
डेमेट्रियस ! योग्य वर है यह ! यह तो देखो !

हर्मिया : ऐसा ही तो लाइसैन्डर है !

थीसियस : वह अपने में भले योग्य है,
किन्तु यहाँ तो प्रश्न तुम्हारे पूज्य पिता की
स्वीकृति का है, इसलिये यह युवक दूसरा
अधिक योग्य है ।

हर्मिया : आह चाहती हूँ मैं कितना,
मेरे पिता देखते यदि मेरी आँखों से ।

थीसियस : अधिक उचित हो यदि वह नयन तुम्हारे देखें
पूज्यपिता के दृष्टिकोण से ।

हर्मिया : हे श्रीमान् दयालु ! क्षमा कर देंगे मुझको,
यही प्रार्थना करती हूँ मैं ।
नहीं जानती किस अभूत साहसी शक्ति ने
मुझको ऐसा मुखर कर दिया !

नहीं जानती, मेरा वह संकोच सुलभ नारी का भी
किस ओर क्या हुआ !
जो मैं यहाँ उपस्थिति में ऐसी प्रगल्भ हो व्यक्त कर रही
भाव हृदय के !
पर दयालु ! विनती करती हूँ, एक चाह है मेरे भीतर,
यह बतलायें, यदि मैं डेमेट्रियस न चुन कर,
करूँ विवाह न उससे तो क्या
आयेंगी विपत्तियाँ मुझ पर !

थीसियस : नियम यही है—या तो तुमको जाना होगा
मृत्यु दंष्ट्र में, या मानव समाज से बिल्कुल
परित्यक्त हो दूर पड़ेगा रहना अपना बाकी जीवन।
सुघर हर्मिया ! इसीलिये अपनी तृष्णा से
कर लो तर्क वितर्क सोच कर।
अपने यौवन से तो पूछो, अपनी चपल वासना के
उच्छृंखल आवेशों को परखो,
यदि तुम अपने पूज्य पिता की आज्ञा का पालन न
कर सकीं,
तो क्या साध्वी का कठोर जीवन सह लोगी ?
ब्रह्मचारिणी का एकांत न खा डालेगा तुमको बोलो ?
वह अनंत सूनापन उस नीरव जीवन का,
जिसमें नहीं ताप मिलता कोई रंजन का ?
दीन वासना हीन चंद्रमा —
उसे देखकर कब पक पीडित मंत्र निभृत में
बोल सकोगी ?
उस संयम की मर्यादा का पालन करने वालों को

मत समझो तुम कोई साधारण,
क्या कौमार्य्य तुम्हारा ऐसी
तीर्थयात्रा की कठोरता झेल सकेगा ?
वह गुलाब का फूल खिला रहता काँटों पर,
है अनंत एकांत अकेला उसका साथी,
वहीं फूलता, वहीं रूप की ज्योति जगाता
और वहीं मुरझाकर होता लीन काल के महाशून्य में।
श्रेयस्कर है, किंतु प्रेय वह नहीं जगत में।
धरती का सुख है इसके स्पर्शों में चचल !

हर्मिया : हे प्रभु ! मैं कौमार्य्य बिना दूँगी यह अपना
उसी निभृत के तप्त कुसुम सी,
किंतु भार यह अस्वीकृत है मुझे आपका,
यह स्वामित्व मुझे क्षण भर स्वीकार नहीं है।

थीसियस : क्षण भर सोचो और शब्द दो तब विचार को।
अभी समय है। नये चंद्र के आने तक लो—
जब मैं और प्रिया मेरी दोनों ही मिल कर
एक पाश में लय होवेंगे,
उल्लंघन कर आज्ञा अपने पूज्य पिता की
उस दिन या तो मृत्यु-विवर में जाने को तैयार रहो तुम,
या इस डेमेट्रियस सुघर से परिणय कर लो !
या वेदी पर सुमुखि डायना देवी की यह करो प्रतिज्ञा
तपस्पूर्ण जीवन कठोर एकांत वरोगी।

डेमेट्रियस : आह हर्मिया ! रुको, अहे लाइसैन्डर अब तो
हठ को त्यागो !
यह मेरा अधिकार एक है, इसके सन्मुख

मत रखो अपने मन की यह चपल चाहना !

लाइसैन्डर : डेमेट्रियस ! तुम्हें तो उसके पूज्य पिता का
प्रेम मिला है।
मुझे हर्मिया का मिल पाया मधुर प्रेम है।
पूज्य पिता से ही विवाह कर लो तुम अपना।

एजियस : ओ जघन्य लाइसैन्डर! इसने मेरी
प्रेमराशि पाई है, औ' है जो कुछ मेरा
मेरा प्रेम उसे उस सब को निश्चय देगा।
यह मेरी है, इस पर मेरा जो अधिकार प्राप्त है मुझको
वह मैं डेमेट्रियस सुजन को निश्चय दूंगा।

लाइसैन्डर : हे श्रीमान् ! जहाँ तक कुल का प्रश्न खड़ा है,
मैं भी तो कुलीन हूँ इसकी भाँति, शुद्ध हूँ !
मेरा वैभव भी है इसकी भाँति यशस्वी।
इन गर्वीले कथनों से ऊपर है मेरे सुखद भाग की
उज्ज्वल गरिमा,
मैं सुंदरी हर्मिया का हूँ प्रेमपात्र, संसार जान ले !
क्यों अपना अधिकार न माँगू फिर यह बोलो ?
डेमेट्रियस ! शपथ है सच तुम झूंठ न कहना !
क्या तुम ही वह व्यक्ति नहीं हो जिसने बोलो
हेलेना, दुहिता नेडर की, परम सुंदरी,
पहले बहलाई थी अपनी प्रीति प्रगट कर ?
क्या तुमने ही उसका हृदय नहीं जीता था ?
वह सुंदरी बिचारी कितना तुमसे करती प्रेम, प्रेम में
तुम्हें स्वयं देवता समझती,

किसे ! तुम्हें ! ! तुम जो अस्थिर, चंचल मानव हो !
रस के लोभी !

थीसियस : करता हूँ स्वीकार कि अवगत हूँ मैं इससे,
सोचा था कि करूँगा इस पर बात कभी मैं
डेमेट्रियस सुजन से निश्चय।
किन्तु कार्य्य के भीम भार से लदा हुआ मैं
भूल गया था।
डेमेट्रियस सुनो, आओ तुम संग एजियस !
मेरे संग चलो तुम दोनों ! तुमसे मुझको करनी है
एकांत बात कुछ।
सुघर हर्मिया ! पूज्य पिता की आज्ञा का पालन
करने की
चिंता करना ध्येय तुम्हारा बने अभी से।
और नहीं तो नियम देख लो वही पुरातन
इस एथेन्स नगर का सुन लो !
मृत्यु या कि एकांतवास बस दो ही पथ हैं !
हिप्पोलिटा प्रिये आओ ! अब चलें यहाँ से,
प्रेयसि मेरी ! डेमेट्रियस, एजियस आओ !
मुझे तुम्हें कुछ आवश्यक है कार्य्य बताना
इस विवाह का, और तुम्हारे ही बारे में
कुछ बातें भी तो करनी हैं।

एजियस : श्रद्धा औ' इच्छा से हम तत्पर हैं स्वामी।

[**लाइसैन्डर और हर्मिया के अतिरिक्त सबका प्रस्थान**]

लाइसैन्डर : प्रेयसि ! यह क्या ? क्यों कपोल हो गये तुम्हारे
ऐसे पीले ?

कैसे यह गुलाब मुरझाये जाते हैं इतनी तेज़ी से ?

हर्मिया : मेरे नयनों के तूफानों की वर्षा की इन्हें चाह है,
उससे सिंचन पाकर यह फिर जाग्रत होंगे !

लाइसैन्डर : आह ! बताता है इतिहास मुझे यह अब तक
सच्चा प्रेम कभी भी पंथ न सहज पा सका।
या तो कुल का भेद बीच में बंध बन गया—

हर्मिया : ऊँच नीच का था व्यवधान कठोर बीच में।

लाइसैन्डर : या फिर भेद आयु का आया !

हर्मिया : प्रेयसि-प्रियतम में कितना छल यों समा गया !

लाइसैन्डर : या फिर कोई अन्य मित्र ही चुनता संगी

हर्मिया : ओ धिक्कार कि वर या वधू चुने आकर यों
किसी और की आँख ! भला क्या होगा उसमें ?

लाइसैन्डर : यदि दोनों ही ओर प्रेम संवेदन पाकर
योग्य पात्र में हुआ, उस समय
युद्ध, मृत्यु या रोग डाल देते हैं घेरा
आकर उस पर,
ध्वनि सा उसे क्षणिक कर देते,
छाया सा चल, अरे स्वप्न सा लघु कर देते !
जैसे स्याह रात में बिजली पलक झपकते
गगन भूमि को चकाचौंध में दर्शित करती—
इससे पूर्व कि मनुज पुकारे 'सावधान हो',
निमिष मात्र में अंधकार के भीषण जबड़े
उसे निगलते;
उज्ज्वल वस्तु विलय को पातीं यों क्षण भर में।

हर्मिया : तब तो सच्ची प्रीति सदा बंधन पाती है
यही भाग्य का यदि निर्णय है,
आओ तब तो हम संकट में धैर्य्य धरेंगे।
यह तो नियम सदृश है बंधन।
ज्यों कि प्रेम में दीन कल्पना के अनुयायी
स्वप्न, चाहना, अश्रु, आह, उच्छ्वास, भावना
प्रेम-नियम हैं।

लाइसैन्डर : आह ! हृदय कैसे समझाया !
सुनो हर्मिया ! विधवा चाची है मेरी अति धनी एक, जो
है एथेन्स से दूर सात योजन औ' मुझको
अपना पुत्र समझती, वह जो पुत्रहीन है।
प्रिये हर्मिया ! वहाँ करेंगे हम विवाह चल,
इस एथेन्स के तीक्ष्ण नियम यह, वहाँ नहीं सच,
पीछा अपना कर पायेंगे। यदि है तुमको
मुझसे सचमुच प्रेम हर्मिया ! तो कल निशि में
निकल चलो तुम घर से अपने पूज्य पिता के,
और नगर से योजन भर की दूरी पर ही
वन में जहाँ हेलेना के संग मिला कभी था
तुमसे एकबार मैं पहले, ग्रीष्म प्रात की
पूजा की थी मैंने जिस दिन,
वहीं तुम्हारी प्रिये! प्रतीक्षा आह करूँगा !

हर्मिया : हे मेरे प्रियतम लाइसैन्डर !
शपथ काम के धनु प्रचण्ड की,
उसके शर-सुवर्ण मुख की सौगंध मुझे है,
वीनस देवी के विहगों की सहज सरलता

की है मुझको शपथ, कि जिसके
बल पर दृढ़ हो प्रेम समृद्ध हुआ करता है,
जबकि दिखा था झूँठा ट्रायन चढ़ा पोत पर
उसी अग्नि की शपथ कि जिसने धधक जला दी
कारथेज की रानी, सचमुच
उन शपथों की शपथ जिन्हें पुरुषों ने तोड़ा,
जिनकी संख्या कहीं अधिक नारी-वचनों से,
वहीं मुझे तुमने है प्रियतम पुनः बुलाया !
कल आऊँगी तुमसे मिलने मैं निःसंशय !

लाइसैन्डर : पूरा करना वचन प्राण ! लो देखो तो वह
हेलेना आ रही इधर है।

[**हेलेना का प्रवेश**]

हर्मिया : हेलेना तुम किधर चल पड़ीं ? करे भला
भगवान तुम्हारा अहे सुंदरी !

हेलेना : मुझे सुंदरी कहती हो तुम ? मत कहना फिर,
अहे सुदरी ! तुम हो सुंदरि,
डेमेट्रियस प्यार करता है तुमको।
रूप तुम्हारे नयनों से बरसा करता है,
कोकिल से भी मीठे मनहर बैन तुम्हारे
जो वसंत के फुल्लकुसुम मकरंदों में रह
कूका करता।
आह वेदने ! होता मेरा भाग्य कहीं सच
तुम जैसा ही सुघर हर्मिया !
पाती यदि मैं भर आँखों में रूप तुम्हारे इन नयनों का,
यह स्वर कोमल मुझमें यदि रम पाते तो प्रिय !

डेमेट्रियस प्राप्त यदि हो जाये फिर मुझको
मैं प्रतिछाया बनने को प्रस्तुत हूँ देखो
सुघर तुम्हारी प्रिये हर्मिया !
मुझे सिखादो वह सम्मोहन, जिसके द्वारा
डेमेट्रियस-हृदय को तुम हो जीता करतीं,

हर्मिया : उसे देखती तिरस्कार से सदा किन्तु मैं
फिर भी प्यार मुझे करता है,

हेलेना : आह तुम्हारा तिरस्कार यदि सिखा सके यह
कौशल मेरी मुस्कानों को !

हर्मिया : मैं तो उसको सदा शाप देती रहती हूँ,
फिर भी वह तो प्यार प्यार देता है मुझको।

हेलेना : यदि मेरी प्रार्थना प्रणय को तनिक जगाती !

हर्मिया : जितनी करती हूँ मैं उससे घृणा तीक्ष्णतर
उतना ही वह मेरे पीछे डोला करता।

हेलेना : जितना अधिक प्यार करती हूँ उसको प्रिय मैं
उतना ही वह मुझे घृणा करता है आली।

हर्मिया : हेलेना ! मूर्खता किंतु उसकी यह सारी
मेरा तो अपराध नहीं है कोई निश्चय।

हेलेना : नहीं, तुम्हारा नहीं, तुम्हारे सलज रूप का ही है आली,
होता यदि मौजूद कहीं मुझमें ही हे सखि
यह सुंदर अपराध तुम्हारा !

हर्मिया : धीरज धरो ! अब न देख पायेगा वह मुख
मेरा सुन लो !
लाइसैन्डर औ' मैं अब निश्चय, कर जायेंगे
इस बंधन की दीन जगह से दूर पलायन।

लाइसैन्डर के मिलने से पहले तो मुझको
यह एथेन्स स्वर्ग लगता था,
आह प्रेम में जाने कैसी है विचित्रता !
अब वह स्वर्ग नरक लगता है ।

लाइसैन्डर : हेलेना ! रहस्य तुमसे न रखेंगे,
कल जब चंद्र-देवि देखेगी
चाँदी सा प्रतिबिम्ब सुधर प्रिय
पानी के दर्पण में अपना मुखर रजनि में,
दूबों पर बिखरायेगी मोती सिंगार के चपल पनीले,
समय-मीत जब प्रेयसि-प्रिय के मुग्ध पलायन
को है देता छिपा स्नेह से,
हम एथेन्स के सिंहद्वार से निकल जायेंगे !
यही योजना की है निश्चित ।

हर्मिया : उस वन में ही, जहाँ गुलाबों की शैय्या रच
बहुधा हम तुम अलसाई सोया करती थीं ।
अपने मन के मीठे-मीठे भेद परस्पर
खोला करती थीं मुस्काती ।
वहीं मिलूँगी मैं अपने प्रिय लाइसैन्डर से ।
नयन फिरा लेंगे एथेन्स से राखी वहीं से !
नये मित्र, नूतन समाज ढूंढ़ने विश्व में
कहीं चल पड़ेंगे हम नूतन पंथ ग्रहण कर ।
बिदा ! सखी ! कितने खेलों की प्यारी साथिन !
करो हमारे लिये प्रार्थना परमात्मा से !
हो सौभाग्य पूर्ण तेरा भी, मिले तुझे वह
तेरा प्रियतम, डेमेट्रियस प्यार दे तुझको !

गहरी आधी रात तलक कल हे लाइसैन्डर !
नयन तृषित ही रहें हमारे, प्रेम-अमृत से दूर,
क्योंकि कल दर्शन होंगे ।
वचन निभाना !

लाइसैन्डर : क्यों संदेह भला करती हो । निश्चय जानो ।

[हर्मिया का प्रस्थान]

बिदा, हेलेना !
जैसे तुम हो उसे चाहतीं,
वैसा ही वह करे प्यार तुमसे डेमेट्रियस !

[प्रस्थान]

हेलेना : किसका किसको हर्ष प्राप्त होता है जग में
कौन जानता !
मैं ऐथेन्स में इस जैसी ही मानी जाती सुघर सुन्दरी !
पर इससे क्या ! डेमेट्रियस सोचता ऐसा भला कहाँ है?
वह क्या जानेगा जो सबको ज्ञात हृदय में,
उसे हर्मिया के नयनों में जीवन भूला, जैसे मैं हूँ
उसके गुण पर रीझी जाती !
घृणित और कुत्सा असीम तक को भी तो यह
प्रेम एक देता है गौरव,
प्रेम नयन से नहीं देखता, वह तो मन की
आँखों से देखा करता है ।
तभी पंखमय कामदेव को अंधा ही
सब माना करते,
और प्रेम के मन की भी पसन्द को कोई
नहीं बता सकता है जग में ।

नयनहीन, बस पंख, और गतिचंच ल धावित,
तभी प्रेम को चपल चपल बालक सब कहते,
क्योंकि वरण उसके सदैव हैं आतुरता में
भूल-भूल से बन जाते हैं,
खेल खेल में जैसे बालक दाँव लगाते
प्रेम इसी विधि सब कुछ ही खोया करता है ।
डेमेट्रियस हर्मिया के नयनों की छवियाँ
जब न देख पाया था तब तो नित ही आकर
मेरे सम्मुख सौगन्धों का ढेर लगाया
करता था ऐसा रीझा सा !
किंतु वासना का तुषार वह उस प्रेमी का
ज्योंही ताप हर्मिया की अनिंद्य छवि का पा
गया अचानक, पिघल गया वह,
सौगंधों की बौछारें वे पिघल बह चलीं !
डेमेट्रियस ! चलूँ उसके ही पास चलूँ मैं !
चलूँ ! हर्मिया भाग रही है, उसे बताऊँ ।
तब तो वह कल रात करेगा उसका पीछा
वन में जायेगा वह निश्चय,
हो सकता है हो कृतज्ञ वह मेरे प्रति भी
यह सूचना प्राप्त कर मुझसे !
कितना मँहगा मोल पड़ा है मुझको सचमुच !
मेरी पीड़ा घनीभूत होकर समृद्ध हो,
उसे देख कर लौटूँगी मैं दुःखबद्ध हो !

[प्रस्थान]

दृश्य २

[वही । क्विन्स का घर]

[क्विन्स, स्नग, बौटम, फ़्लूट, स्नाउट, और स्टारवेलिंग का प्रवेश]

क्विन्स : क्या हमारी सारी मंडली यहाँ मौजूद है ?

बौटम : आप सूची में एक-एक करके नाम पढ़िये न ?

क्विन्स : यह रही सूची, सारे एथेन्स में ड्यूक और डचेस के सामने खेले जाने वाले रूपक को खेलने के लिये नितांत योग्य समझी जाती है। हाँ उनकी शादी की रात को !

बौटम : अच्छे पीटर क्विन्स ! पहले बताइये ! रूपक में क्या है ? फिर अभिनेताओं के नाम पढ़िये, यों धीरे-धीरे बात पर आइये !

क्विन्स : हमारा रूपक है, बड़ा ही दुःख से भरा सुखांत नाटक। पाइरैमस और थिस्बी की बड़ी दर्दनाक मौत होती है।

बौटम : वाह-वाह क्या बात है। बड़े ज़ोर की रहेगी। अब अच्छे पीट क्विन्स ! ज़रा अपने अभिनेताओं की हाज़री लेलो। भाइयो, आजाइये यहाँ !

क्विन्स : अच्छा बोलता हूँ। हुंकारी भरते जाइये। निक बौटम, बुनकर !

बौटम : हाजिर हूँ। बताइये मुझे कैसा और किसका पार्ट करना है ?

क्विन्स : तुम निक बौटम, बनोगे पाइरैमस।

बौटम : पाइरैमस क्या है ? प्रेमी या अत्याचारी ?

क्विन्स : प्रेमी, जो प्रेम में पागल होकर अपने आपको मार डालता है !

बौटम : तब तो असली अभिनय के लिये कुछ आँसुओं की ज़रूरत पड़ जायगी। अगर मैंने यह पार्ट किया तो दर्शकों की आँखें देखना। तूफ़ान मचा दूंगा, देख लेना। लेकिन पार्ट तो मैं असली करता हूँ, अत्याचारी का। अरक्लीज़ का पार्ट तो कैसा जमता है कि

बिल्ली के चिथड़े उड़ा दूँ !

हिलती हुई क्रुद्धमान
भयमय घन चट्टान
होती हों कंपमान
मुक्त मुक्त कर समस्त बंदीगृह-द्वार,
शशि का रथ दीप्तमान
दूर से प्रकाशमान
दूर से ही सिरजमान
फिर मिटाये भाग्यबंध जीवित मनुहार !

क्या ऊँची बात है ! हाँ जी अब बाकी अभिनेता ! यह तो अर-क्लीज़ का ज़ोम था,अत्याचारी का। प्रेमी तो बिचारा बड़ा बोदा होता है !

क्विन्स : फ्रान्सिस फ्लूट, धौंकनी बजाने वाला।

फ्लूट : हाज़िर हूँ पीटर क्विन्स !

क्विन्स : तुम थिस्बी बनोगे फ्लूट !

फ्लूट : थिस्बी क्या है ? घुमक्कड़ वीर योद्धा ?

क्विन्स : नहीं। वह स्त्री है जिससे पाइरैमस प्रेम करता है।

फ्लूट : हे भगवान ! मुझे औरत न बनाओ ! मेरी तो दाढ़ी निकलने लगी है।

क्विन्स : कोई बात नहीं। तुम चेहरा चढ़ा लेना और जहाँ तक हो सके कम बात करना।

बौटम : अरे मैं चेहरा छिपा लूँगा अपना। थिस्बी का भी पार्ट कर लूँगा मैं। मैं बड़ी दिलफ़रेब पतली आवाज़ में बोलूँगा—'थिस्बी ! थिस्बी!' 'आह पाइरैमस ! मेरे प्रेमी ! मैं तेरी प्यारी हूँ, मैं तेरी थिस्बी हूँ।'

क्विन्स : नहीं, नहीं। तुम पाइरैमस बनोगे, फ्लूट ही थिस्बी ठीक रहेगा।

बौटम : अच्छी बात है। आगे चलिये।

क्विन्स : रोबिन स्टारवेलिंग, दर्ज़ी।

स्टारवेलिंग : यह रहा मैं, पीटर क्विन्स !

क्विन्स : रोबिन स्टारवेलिंग ! तुम थिस्बी की अम्मा बनोगे ! टौम-स्नाउट, ठठेरा।

स्नाउट : हाज़िर हूँ, पीटर क्विन्स !

क्विन्स : तुम पाइरैमस का बाप। मैं थिस्बी का बाप। स्नग, लुहार ! तुम सिंह बनोगे। और मैं समझता हूँ, अब सब ठीक पार्ट बँट गये।

स्नग : सिंह का पार्ट लिखा हुआ है ? हो तो कृपा करके दे दें, मुझे देर में याद होता है।

क्विन्स : तुम बिना तैयारी के बोल सकते हो। तुम्हें और कुछ नहीं करना, सिर्फ़ गरजना है।

बौटम : मैं ही शेर का पार्ट कर लूंगा। मैं गरज लूंगा, ऐसा कि मर्दों का दिल दहल जाये। सच कहता हूँ ऐसा गरजूंगा कि ड्यूक न कह उठे—और गरजो ! और गरजो !

क्विन्स : और ऐसी ज़ोर से गरजना, कि डचेस और सारी स्त्रियाँ डर जायें, चिल्ला उठें और फिर हम सबको मज़े में फाँसी के फंदे मिल जायेंगे, इनाम में।

सब : सब लटक जायेंगे, औरत के जने सब !

बौटम : दोस्तो ! मैं जानता हूँ कि अगर औरतें डर गईं तो उनके पास हमें लटका देने के सिवाय कोई चारा ही नहीं रहेगा ? लेकिन मैं अपनी आवाज़ ऐसे बढ़ाऊँगा और इतनी मुलायमियत

से गरजूंगा जैसे चिड़िया चहकती है और ऐसा गरजूंगा जैसे कोयल बोल रही हो !

क्विन्स : तुम सिवाय पाइरैमस के और किसी का पार्ट नहीं कर सकते, क्योंकि पाइरैमस सुन्दर आदमी है, एक अच्छा आदमी है, ऐसा जैसे ग्रीष्मऋतु होती है; एक बड़ा सुन्दर आदमी, एक भला-सा लगनेवाला आदमी । इसलिये तुम्हें ही पाइरैमस बनना है ।

बौटम : अच्छी बात है, मैं बन जाऊँगा । अच्छा इसके लिये मैं कैसी दाढ़ी लगाऊँ जो सबसे ज्यादा जँचे !

क्विन्स : जैसी तुम्हारी मर्ज़ी हो ।

बौटम : तो मैं पीली दाढ़ी लगाऊँ या नारंगी रंग की छोटी-सी, या कुछ कत्थई, या फ्रेञ्च बादशाह की-सी ? बिल्कुल पीली !

क्विन्स : बहुत-से तुम्हारे फ्रेञ्च बादशाहों के बाल ही नहीं होते और फिर तुम्हारा तो चेहरा खुला रहेगा । लीजिये भाइयो ! यह रहे आपके पार्ट । और मैं आपसे विनय करता हूँ, प्रार्थना करता हूँ, विनती करता हूँ कि कल रात तक याद कर डालें सब, और प्रासाद के वन में मिलें, नगर से एक मील दूर, चाँदनी में । वहाँ अपना रिहर्सल होगा क्योंकि अगर हम नगर में यह सब करेंगे तो नगरवासी कुत्तों की तरह मंडली को घेर लेंगे, हमारी बातें जान जायेंगे, तब तक मैं नाटक के लिये ज़रूरी सामानों की सूची बनाता हूँ । देखिये । मेरी बात न मिट जाये !

बौटम : ज़रूर मिलेंगे हमलोग । वहाँ तो जम के रिहर्सल होगा, हिम्मत

से, खूब फ़ोश तरीके से ! तकलीफ़ पाओ, मगर कमाल करो। बिदा।

क्विन्स : तो ड्यूक के ओक के पेड़ के पास मिलना पक्का रहा।

बौटम : बस-बस ! काफ़ी हुआ। कमान थाम के डोरी काट दो।

[प्रस्थान]

दूसरा अंक

दृश्य १

[एथेन्स के पास का वन]

[अलग-अलग ओर से एक परी और पक का प्रवेश]

पक : कहो परी ! तुम कहाँ घूमती फिरती हो यों !

परी : पर्वत, घाटी, वन, हरियाली,
अग्नि, लहर सब पर मतवाली,
मैं सर्वत्र घूमती रहती
चन्द्रकला से भी त्वर चलती।
परियों की रानी की दासी
मैं हूँ चपला नहीं उदासी,
हरीतिमा पर सज्जित करती
नीहारों की झिलमिल रचती।
पीले कुसुमों की छवियों में
रहते लाल बिंदु मुखरित से,
परियों को वे हैं अति भाते
मांसल दल लगते पुलकित से।
चलूँ कहीं नीहार ढूंढ लूँ,
कुसुम-कुसुम के कानों में अब
लटका दूं मोती से उज्ज्वल,
बिदा, बिदा लो, जाती हूँ अब !
ओ हे आत्मा ! समय पास है

परियों की रानी आयेगी
परियों से घिर कर आयेगी,
बेला उनकी बहुत पास है।

पक : आज निशा तो परियों के राजा का रंजक
उत्सव होगा किंतु यहाँ पर,
इतना रखना ध्यान कि रानी आये नहीं दृष्टि में उसकी,
ओबेरोन क्रुद्ध है काफ़ी,
क्योंकि आजकल रानी के जो पास एक सेवक है उसका
सुन्दर बालक,
जिसे किसी भारत के राजा से है लाया गया चुरा कर,
ऐसा सुंन्दर बाल चुराकर परियों ने जो बदल लिया है
अपना वाला वहाँ अरे ! रख
कभी न पाया ऐसा तो इस रानी ने था।
ओबेरोन ईर्ष्यारत सा चाह रहा है बालक को वह
अपना सेवक स्वयं बना ले, ताकि भ्रमण करने में वन में
संग रहे वह।
किंतु नहीं तजती बालक को हठ कर रानी।
उसे कुसुम कुड्मल का है शृंगार मनोहर करके
विहँसित स्वयं सजाती,
वह उसकी प्रसन्नता का आधार बना है।
अब तो राजा रानी दोनों कभी नहीं कुञ्जों में मिलते
नहीं घूमते हरीतिमाओं की मोहक श्यामल छाया में
स्फटिक निर्झरों या तारों की मधुर ज्योति में
कभी न मिलते। उनमें रहता है झगड़ा ही,
वन प्रांतर की परियाँ भय से जा कर फूलों में छिपती हैं।

परी : या तो मैं पहँचान नहीं पा रही तुम्हें हूँ,
या तुम हो वह चतुर और चालाक बहुत शैतान
चपलमन
जो कहलाते रोबिन सज्जन ! क्या तुम ही वह
नहीं कि जो भयभीत किया करते हो यों ही ग्राम-
युवतियाँ !
दूध बिलोते या गृहकाजों में तुम उनको परेशान कर
बहुत सताया करते हो न ?
मदिरा में से फेन किया करते हो गायब,
रात्रि पंथियों को भरमाते, और हँसा करते हो तुम
उनको भटका कर ?
मधुर स्नेह से तुम्हें सभी 'पक' ही तो कहते,
क्योंकि काम भी तो उनके तुम कर देते हो ?
लाते हो सौभाग्य ! वही हो ना ? बोलो तो ?

पक : तुम कहती हो ठीक ! अरे मैं ही हूँ,
मस्त निशाचर, सदा हँसाता ओबेरोन को,
उसका एक विदूषक, जब मैं
खाये पिये मस्त कद्दावर घोड़े को भी हूँ भरमाता
अरे हिनहिनाकर उठान घोड़ी के स्वर में।
कभी गप्प करती औरत के प्याले में मैं
उबला हुआ केंकड़ा जैसा बन छिपता हूँ
और पिया करती है जब वह, तब मैं होठों से टकरा कर
उसकी गर्दन में झूलती हुई उस मरियल मांस-झूल पर
झट शराब फैला देता हूँ।
बहुत चतुर चौकस चाची जो दुख से भरी कथा कहती है

कभी-कभी वह मुझे तिपाई समझ भूलती
और सरकता मैं नीचे से, वह धड़ाम से गिर जाती है।
वह दर्ज़ी को दोषी कहती, खाँसा करती,
सब हँसते हैं कमर पकड़कर हा हा ही ही,
मस्त झूमते, 'ऐसा वक्त कहाँ मिलता है,' सभी मानते।
किन्तु हटो अब परी ! निहारो लो वह
ओबेरोन आ रहा है अब !

परी : मेरी वह स्वामिनी आ गई ! काश चला जाता यह राजा।

[**एक ओर से ओबेरोन और उसके सेवक तथा दूसरे ओर से अपने सेवकों के साथ टिटानिया का प्रवेश**]

ओबेरोन : आह चाँदनी का दुर्भाग्य मिल गई
टिटानिया मानिनी हठीली !

टिटानिया : अरे ! मिले तुम ईर्ष्याग्रस्त अचानक आ कर
ओबेरोन यहाँ पर ! परियो ! दूर रहो तुम !
मैंने इनकी शैय्या, और संग दोनों को अपना
वर्जित सा समझा है।

ओबेरोन : ठहरो ! अरे मदांध चंचले ! क्या मैं नहीं
तुम्हारा स्वामी ?

टिटानिया : तब तो मैं स्वामिनी रहूँगी जान रहे हो ?
किन्तु मुझे है ज्ञात कि तुम हो परिस्तान से
छिप कर निकले
कोरिन बन कर सारे दिन है तुमने नरकुल की बंसी में
प्रेम गीत गुंजारे हैं वासनामयी उस फिल्लीडा के हेतु
रीझ कर।

क्यों आये हो कहो इंडिया के सुदूरतम मैदानों से ?
पर मत भूलो एमेजौन सुंदरी, गमकती वह यौवन
से प्रिया तुम्हारी
जो ऊँचे जूते पहना करती है, अपने योद्धा प्रेमी
अरे थीसियस से ही उसका परिणय होगा। तुम आये हो
उनकी सुख समृद्धि को केवल हर्षित करने।

ओबेरोन : टिटानिया ! धिक्कार तुम्हें है।
हिप्पोलिटा ! खटकती है ऐसी नयनों में ?
अरे थीसियस से है प्रीति तुम्हारे मन में,
छिपी नहीं है मुझसे कोई,
पैरीजीनिया, जिससे उसने बलात्कार था किया अरे
नक्षत्रों की झिलमिल छायावाली रजनी में,
तुमने ही क्या नहीं दिखाया उसे मार्ग था ?
सुंदरि ऐजल, एरिआद्न औ' एन्टिओपिया
से तुमने ही उसके वचनों को झुँठलाया !

टिटानिया : जालसाज़ियाँ हैं यह केवल विद्वेषों की।
हम वसंत के मध्यकाल के बाद कभी भी
वन पर्वत घाटी कुञ्जों या सिंधु तीर पर
नहीं मिले हैं कहीं, पवन की गुंजारों पर
लटें झुलाते।
अरे तुम्हारे ही झगड़े ने केलि हमारी में बाधा डाली
है ऐसी।
इसीलिये तो गूँज गूँजकर व्यर्थ हमारे हेतु
एक प्रतिहिंसा भरकर
सुखा दिया है फेन सिंधु से, जो धरती पर

बरस-बरस कर बना गया है नदी नदी को कर समृद्ध
ऐसा गर्वीला, उमड़ उमड़कर देखो तो छा गई तीर के
सब प्रदेश पर।
अरे इसलिये व्यर्थ हो गया बैलों का वह श्रम यों
जूआ ढोते ढोते
औ' किसान का स्वेद बह गया हाय निरर्थक,
पकने से पहले ही सारा अन्न सड़ गया,
डूब गये हैं खेत हाथ से पौधे खोले खड़े हुए हैं,
कौए मृत पशुओं को खा कर मुटा गये हैं,
नौ-नौ के दल में जो नृत्य हुआ करते थे सुंदर सुंदर
शबलित वस्त्र पहनकर
कीचड़ से भर आज गये हैं,
पगडंडियाँ सघन हरियाली की खोई हैं,
अब चलता है कौन जो कि वे जानी जायें !
मर्त्य चाहते शीतकाल हैं,
किंतु रात में अब सामूहिक गीत नहीं होते पवित्र हैं,
बाढ़ों की शासिका चंद्रदेवी तब ही तो
पीली पड़ कर महारोष से धोती सारी वायु, और
गठिया की ही भरमार दीखती !
बदल रही हैं ऋतुएँ सारी। वह तुषार सितशीश
शीत हैं
मृदुल गुलाबों की गोदी में जा गिरते हैं।
वृद्ध शीत के पतले हिमकिरीट पर गंधित
ग्रीष्मकाल के मधुर फूल, कलियों की माला
दिखती है कैसा कठोर उपहास बनी सी !

रे वसंत, ग्रीष्मा, उत्पादक वह हेमंत, शीत क्रोधी, सब
यों अभ्यस्त वस्त्र अपने हैं बदला करते,
और चमत्कृत लोक, वृद्धि से उनकी ऐसे,
अब पहँचान नहीं पाता है, कौन कौन है ?
यह बुराइयों की परंपरा आती है अपने विवाद के
कारण ही तो,
अपने मनमुटाव के कारण, हम हैं उनके जनक,
मूल कारण हैं हम ही !

ओबेरोन : आओ प्रायश्चित्त करो फिर इसका यह है हाथ तुम्हारे,
अपने ओबेरोन प्राण को टिटानिया क्यों क्रुद्ध बनाये ?
बदला हुआ एक वह बालक ही तो चाह रहा हूँ अपना
सेवक प्रिये ! बनाने तुम से !

टिटानिया : मन को करो शांत तुम अपने ।
सारा परिस्तान भी बालक का तो मोल न दे पायेगा
मुझको । इसकी माता
मेरे ही पंथ की एक थी वह उपासिका,
गंधभरी इंडियन वायु में कई निशाएँ
बीतीं अपनी बातें करते बहुत लुभानी ।
बैठी मेरे साथ अरे वह नैप्च्यून की
पाण्डुरसिकता पर अलबेली
लहरों पर आते निहारते व्यापारीगण,
जबकि मस्त भर पवन फुलाते पाल
गर्भिणी के उदरों से; हम हँसती थीं ।
वह मधुरा तब तैर रही सी किये अनुगमन—
(यह बालक उसके भीतर था जबकि गर्भ में)

नकल किया करती थी, धरती पर जहाज़ सी,
लौटा करता ज्यों यात्रा से, लदा हुआ वह
मूल्यवान वस्तुएँ लिये ज्यों !
किंतु मर्त्य थी, इसीलिये जब इसे जन्म दे हाय मर गई,
उसके हित मैंने यह बालक पाल लिया है,
और उसी के हेतु नहीं छोड़ूँगी इसको,
इसका तो असह्य है मुझको सच वियोग भी।

ओबेरोन : इस वन में कब तक रुकने का है विचार यह
कहो तुम्हारा !

टिटनिया : यहाँ थीसियस के विवाह तक रुकने का विचार है मेरा,
यदि धीरज धर तुम भी नृत्य करोगे हममें,
देखोगे ज्योत्स्ना में अपने आनंदोत्सव, संग रहोगे,
और नहीं तो, छोड़ो मुझको, चली जाऊँगी
दूर तुम्हारी बास भूमि से।

ओबेरोन : दे दो मुझको यदि वह बालक
संग तुम्हारे चला चलूंगा।

टिटानिया : सारा परिस्तान भी दे दो, तो भी क्या है ?
परियो आओ ! व्यर्थ ठहरना है अब अपना।
आओ चल दें।

[**टिटानिया का सेविकाओं के साथ प्रस्थान**]

ओबेरोन : जाओ जाओ ! किंतु कुञ्ज से देखूं कैसे जाती हो तुम
जब तक इस कटु तिरस्कार का बदला लेता
नहीं अभी मैं !
प्यारे पक, तुम सुनो ! याद है एक बार मैं
बैठा था जब अंतरीप पर

एक वहाँ पर मत्स्य-अंगना
बैठी सागर की मछली पर
ऐसे मीठे स्वर से गाती थी विभोर कर
भीषण सिंधु गीत सुन उसका झूम गया था शांत
हुआ था ?
टूट गये थे पागल हो कर तब कुछ तारे
मत्स्य-अगना का सुनने को गीत सुरीला !

पक : मुझे याद है।

ओबेरोन : मैंने देखा था उस क्षण ही,
तेरा ध्यान नहीं था उस पर,
शीतचन्द्र औ' पृथ्वी के इस अंतराल में
उड़ते-उड़ते सज्जित मन्मथ ने बाँधा था अपना लक्ष्य
ध्यान से
.क कुमारी पर पश्चिम में बैठी थी जो,
अपने धनु से प्रेम-बाण वह छोड़ दिया था उसने
उस पर।
वह शर था कि बेध देता लाखों हृदयों को
मन्मथ का ज्वलंत शर था वह, पर मैंने तो
देखा वह बुझ गया पनीले शशि की निर्मल पूत
रश्मियों में भींगा सा।
वह विभान्विता उपासिका निश्चल चिंतन में
रही लीन ही, था कौमार्य्य भाव यों व्यापा
मुक्त कल्पना !
देखा मैंने जहाँ गिरा था सर मन्मथ का
एक पश्चिमी मृदुल कुसुम पर गिरा हुआ था,

जो पहले था दुग्ध श्वेत वह
प्रेम-घाव के कारण अब हो गया बैंगनी,
कुमारियाँ उसको पुकारती हैं—'आलस का प्रेम'
नाम दे।
मुझको ला दो वही फूल तुम, तुम्हें दिखा मैं स्वयं
चुका हूँ उसका पौधा एक बार हाँ।
उसका मधु यदि सोती पलकों पर थोड़ा सा
आँजा जाये
पुरुष या कि स्त्री, नयन खुलें जब जिसको देखे
उस पर ही तन मन से होवे झट न्यौछावर !
लाओ वह बूटी तुम मुझको, जल्दी जाओ,
भीम पोत सागर में योजन भर न चल सके
उससे पहले ही आ जाओ !

पक : मैं चालीस मिनट के भीतर सारी धरती
की परिक्रमा करके आता हूँ बस देखें।

[**प्रस्थान**]

ओबेरोन : एक बार वह मधु पा जाऊँ!
देखूंगा टिटानिया जा कर सोती है किस जगह, वहीं बस
जा कर उसके नयनों में उसको डालूंगा।
नयन खोलते ही जिसको देखेगी, तब वह
सिंह, भेड़िया, बैल, नकलची बदर या लंगूर भले ही,
पीछे दौड़ेगी वह उसके भरे प्रेम आत्मा में अपनी।
जड़ी और है एक पास मेरे जिससे मैं इसकी शक्ति
हटा सकता हूँ,
मैं उसका बालक ले लूंगा।

अरे कौन आ रहा यहाँ है ? मैं अदृश्य हूँ
सुन लूँ मैं इनकी बातों को ।

[डेमेट्रियस का प्रवेश, पीछे हेलेना]

डेमेट्रियस : तुमसे प्रेम नहीं करता मैं, इसीलिये तुम
मेरा पीछा करो न ऐसे !
लाइसैन्डर है कहाँ ? कहाँ सुंदरी हर्मिया ?
मारूंगा मैं आज एक को, और दूसरी मुझे मारती है
वह निष्ठुर !
तू कहती थी वे दोनों वन में आये हैं यहाँ भाग कर ।
अरे यहाँ हूँ मैं इस वन में, पागल हूँ अब,
मुझे नहीं दीखती हर्मिया !
अरी चली जा दूर चली जा, मत आ पीछे !

हेलेना : ओ निष्ठुर पाषाण हृदय ! मत मुझे हटाओ !
क्यों न खींचते खड्ग लौह का तुम बतलाओ !
मेरा मन भी इस लोहे सा ही सच्चा है,
स्वयं खींचते हो तुम मुझको दोष न मेरा,
आकर्षण की शक्ति छोड़ दो मेरे प्रियतम,
मैं भी यह अनुगमन-शक्ति तब छोड़ूंगी हाँ,
नहीं हाय कुछ भी मेरे वश !

डेमेट्रियस : क्या मैं तुझे रहा बहलाता?
क्या मैं तुझसे कोई प्यारी बात कह रहा ?
क्या न स्पष्टतम शब्दों में कहता हूँ तुझसे
तुझे नहीं करता, कर सकता तनिक प्यार मैं !

हेलेना : इसीलिये तो अधिक प्यार करती हूँ तुमको ।
मैं कुत्ता हूँ प्राण ! तुम्हारा, संग चलूंगी !

हे डेमेट्रियस ! जितना तुम मुझको मारोगे
उतना मेरा प्यार उमड़ तुम पर आयेगा।
कुत्ता जैसा समझ मुझे तुम रख लो प्रियतम !
मारो, कूटो, तिरस्कार कर दो, खो डालो,
केवल इतनी मुझे छूट दो, पीछा मैं कर सकूँ तुम्हारा !
सचमुच मैं अयोग्य हूँ, इतना मुझे ज्ञात है।
आह प्रेम में प्राण ! तुम्हारे और निम्न क्या
माँगूँ तुमसे,
पर मेरे तो लिये यही बहुत सम्मान मान है,
क्या अपने कुत्ते की भी तुम मुझे जगह दे नहीं सकोगे ?

डेमेट्रियस : मेरी आत्मा की कठोर यह घृणा नहीं तुम
उकसाओ अब अधिक और हाँ !
तुम्हें देख कर ही मिचली सी मुझको आती !
घबरा जाता हूँ मैं क्षण में।

हेलेना : मैं भी क्षण में घबराती हूँ जब न दीखते हो तुम
प्रियतम !

डेमेट्रियस : अपनी लज्जा को इतना आतुर न बनाओ
दोषों से भर !
नगर त्याग कर, आई हो तुम उसके पीछे
जो न तनिक भी तुम्हें प्यार करता है फिर यह
समय रात का, निभृत विजन है,
और तुम्हारे पास जानती हो क्या क्या है ?
है कौमार्य्य अमोल ध्यान भी इसका आता ?

हेलेना : सज्जनता गुण प्राण ! तुम्हारे
हैं, सर्वाधिकार मेरे ही !

जब मैं देखा करती प्रियतम वदन तुम्हारा
रात नहीं रहती आँखों में।
मुझे नहीं दिखता अँधियारा।
इस वन में भी मुझे नहीं लगती निर्जनता।
मेरे तो संसार अकेले तुम ही तो हो।
कहो अकेली कैसे हूँ फिर बोलो प्रिय ! मैं ?
मेरा सारा विश्व देख तो रहा मुझे है ?

डेमेट्रियस : अरी भाग कर तुमसे जाऊँ, सघन झाड़ियों में ही
छिपना मुझे पड़ेगा।
तुझे हिंस्र पशुओं की करुणा पर छोड़े जाता हूँ ले अब!

हेलेना : अरे कौन है अधिक हिंस्र तुमसे यह बोलो !
भले छोड़ जाओ जब चाहो,
बदलेगी यह कथा स्वयं ही,
भाग रहा है आह अपोलो, डैफ़ने करती है अनुधावन,
क़ैरा घेरे चली ग्रिफ़िन को, मृगी सिंह को, और भीरुता
को निहार कर पौरुष भागा।[1]

डेमेट्रियस : अब न प्रश्न का उत्तर दूंगा तेरे कोई,
जाने दे तू मुझको अब तो।
यदि पीछे आयेगी तो सुन
मत कर तू विश्वास सोच ले
कानन में मैं तेरे संग करूँगा निश्चय ही

---

१. अपोलो : सूर्य्य; डैफ़ने : ऊषा (वैदिक संस्कृत—दहना)। ग्रीक कथा है, सूर्य्य ऊषा का अनुधावन करता है। ग्रिफ़िन एक काल्पनिक जन्तु है, जिसका शरीर और पंजे शेर के समान और चोंच और डैने बाज पक्षी जैसे माने जाते हैं।

दुष्कर्म जान ले।

हेलेना : मंदिर, नगर, खेत सब में क्या तुमने भला किया है ?
ओ धिक्कार तुम्हें है डेमेट्रियस सुनो तुम !
पाप तुम्हारा है कलंक नारी जीवन पर।
हम न प्रेम के लिये युद्ध कर सकतीं निश्चय,
जैसे पुरुष हाय कर सकते !
हमसे प्रेम किया जा सकता है पर हम तो
प्रेम नहीं कर सकतीं सचमुच।

[डेमेट्रियस का प्रस्थान]

आऊँगी मैं तेरे पीछे, और नरक को स्वर्ग बनाऊँ,
जिन हाथों से मुझे प्रेम है
उनसे ही मैं आज मरूँगी।

[प्रस्थान]

ओबेरोन : विदा, अरी ओ ! इससे पूर्व कि तजे कुञ्ज वह
तू उसको पा, फिर वह तेरा
प्रेम स्वयं माँगेगा झुक कर।

[पक का पुनः प्रवेश]

ओ यायावर ! तुझे मिल गया बता फूल वह ?

पक : हाँ, यह है तो।

ओबेरोन : ला ला। मुझको दे तुरन्त तू !
मुझे ज्ञात है एक तीर वह जहाँ जंगली
फूल उग रहे,
रंग विरंगे कुसुम जहाँ झूला करते हैं,
छायावाली सघन-सघन हरियाली सब पर मीठी मीठी
स्निग्ध उनींदी छाया करती,

और गुलाबों की भोरों से गंध महकती,
सुंदर-सुंदर कुसुम जहाँ पुलकित होते हैं।
वहीं रात को टिटानिया है कभी-कभी सोती फूलों में
नृत्य और आमोदों में विश्रांत शिथिल हो।
वहाँ साँप केंचुली चाँदियों सी चमकीली
छोड़ा करते,
इतनी बड़ी कि किसी परी के लिये बने
परिधान पूर्ण वह ;
इसके मधु को मैं उसके नयनों में आँजूँ,
घृणित कल्पनाएँ जाग उठेंगी।
ले तू भी कुछ ! और कुञ्ज में तनिक ढूंढ़ तू
एक सुदरी है एथेन्स नगर की कोई
पड़ी प्रेम में घृणापूर्ण कटु हृदय किसी
दुर्दात युवक के।
तू ले जा औ' उसी युवक के नयनों में यह
मधु थोड़ा सा तुरत लगा दे,
ऐसी बेला किंतु देखना,
तभी लगाना मधु जब अगले
ही क्षण युवक युवति को देखे।
युवक अरे तू पहँचानेगा देख वस्त्र उसके
एथेन्स के !
सुन्दरि उससे बहुत प्रेम करती है सुन ले,
ऐसा करना युवक अधिक ही करे प्रेम उस
युवती से भी।
पहली बाँग भोर में दे जब ताम्रचूड़, तू

उससे पहले ही आ कर के मुझसे मिलना।

पक : प्रभु ? विश्वास करें, सेवक यह यही करेगा।

[प्रस्थान]

दृश्य २

[वन का अन्य भाग]

[टिटानिया अपनी परी (परी शब्द स्त्री और पुरुष दोनों का वाचक मानना चाहिये, क्योंकि अंगरेज़ी में इसे दोनों के लिये माना जाता है।) साथियों, सेवकों के साथ प्रवेश।]

टिटानिया : आओ एक नृत्य हो जाये झूम-झूम कर
घूम-घूम कर, और एक गाना परियों का,
तब क्षण भर हम गंधित मृदुल गुलाबों के
कीटों को मारें,
और करें चमगादुर से संग्राम छीन लेने को उसके
चर्म पंख, उसके वे जिनसे मेरी प्यारी
छोटी परियों को मिल जायें कोट पहनने को
कानन में,
कोलाहल करते उल्लू को हटा हटा दें पीछे पीछे,
जो कि हमारे विचरण से हो आश्चर्यान्वित
रात रात भर बोला करता है डरावना।
गाओ लोरी, मैं सोऊँगी।
फिर तुम अपने लगो काम में
और मुझे करने दो तुम विश्राम शान्ति से।

[गीत]

एक परी : ओ रे रंग विरंगे चंचल

दो जिह्वा के नाग
अरी सेहियो, गोह, छुछूंदर,
जाओ जाओ भाग,
सोती है परियों की रानी
करती है विश्राम
उसके पास न आना कोई
बन कर स्वप्न-विराम

[समवेत गीत]

लोरी गा,
कोकिले ! मंद मीठे सुरीले मधुर
राग से वायु में प्रीति तू आज भर
लोरी गा !
कर नहीं हानि तू, कर न जादू अरी,
सो रही सुन्दरी नींद से है भरी
लोरी गा !
मूँद ले तू नयन अब विदा, अब विदा
स्वप्न में सुख मिले प्यार जागे सदा,
लोरी गा !

[गीत]

एक परी : जाला बुनने वाले मकड़े
यहाँ न आना पास,
बुनकर मकड़े लंबे डग धर
यहाँ न लेना श्वास ।
काली मक्खी, पास न आना

घोंघे रहना दूर।
कीट पतंगो ! यहाँ न ऊधम
करना, रहना दूर।
[समवेत गीत]
लोरी गा !
[इत्यादि.....]

दूसरी परी : अब सब कुछ है ठीक
चलो अब दूर हटो सब !
प्रहरी बन कर एक रहे औ'
शेष हटो सब !

[परियों का प्रस्थान। टिटानिया सोती है। ओबेरोन का प्रवेश और वह टिटानिया की पलकों पर फूल को निचोड़ देता है।]

ओबेरोन : जब तू जग कर देखेगी, जो दृष्टि पड़ेगा
उससे ही होवेगा रानी ! प्रेम तुझे झट,
उसके ही हित तड़पन तुझमें पैदा होगी,
वह कुछ भी हो, बिल्ली, भालू चीता या फिर
कड़े वाल वाला सूअर जंगली भयद ही।
जगते ही यदि तेरे वह सामने दिखेगा
उमड़ेगा तुझमें तब गहरा प्यार बड़ा ही।
जब हो कोई अधम जीव सन्निकट तभी तू
जगना, उसके गहन प्रेम में तू पड़ जाना।

[प्रस्थान]

[लाइसैन्डर और हर्मिया का प्रवेश]

लाइसैन्डर : प्रिये, हो गई श्रांत हाय कानन में चलते ?

सच तो यह है, राह गया हूँ भूल यहाँ मैं।
अहे हर्मिया ! आओ कुछ विश्राम करें हम, कहो
ठीक है ?
दिन की थकन मिटा लें आओ हम कुछ बेला।

हर्मिया : हाँ लाइसैन्डर ! यही ठीक है। शैय्या रच लो तुम
अपने हित,
मैं तो इस तट पर सिर धर कर अब लेटूंगी।

लाइसैन्डर : यही दूब होगी प्रिय, हम दोनों का तकिया,
एक हृदय, शैय्या भी अपनी एक, वक्ष दो,
किंतु सत्य विश्वास एक ही।

हर्मिया : नहीं ! प्राण लाइसैन्डर ! मेरे हित यह मानो
इतने पास अभी मत लेटो, रहो दूर कुछ।

लाइसैन्डर : प्रिये ! शुद्ध मन है मेरा यह तुम पहँचानो।
आह प्रेम संगीति प्रेम तात्पर्य्य धारती।
मैं कहता हूँ मेरा मन अब उलझ बुन गया
कितना प्रिये ! तुम्हारे मन से !
अब तो यह है एक हृदय ही।
दो हैं वक्ष शृंखला में बँध गये एक ही पूत शपथ की।
दो हैं वक्ष किंतु है उनका सत्य एक ही।
अपने पास मुझे सोने दो, अब मत रोको,
आह हर्मिया ! यह लेटना असत्य न होगा।

हर्मिया : आह चतुर बातें करते हो तुम लाइसैन्डर !
मेरा गर्व और आचार सकल क्या बोलो
क्या कह सकता लाइसैन्डर में भी असत्य है !
मीत सुहाने ! प्रेम और दाक्षिण्य दूर ही तो रहते हैं,

मानव लज्जा में वियोग यह कुमारिका का
सद्गुण ही है,
है कुमार का भी तो गुण ही, यों रहें दूर हम।
मेरे प्रियतम ! अब सो जायें!
प्रेम तुम्हारा इस सुंदर जीवन के अंतिम छोर तलक तो
मिट न सकेगा !

लाइसैन्डर : हो तथास्तु इस सुघर प्रार्थना पर हे बाले !
हो जीवन का अंत वहीं जब अंत सत्य-विश्वास-प्रेम का
होवे प्रेयसि !
यह है मेरी शैय्या ! अरी निदिया मेरी
सुमुखि हर्मिया को दे मीठी शांति मधुरतम ।

हर्मिया : इस प्रार्थी के नयनों को आ नींद सलोनी
शुभ कामना बाँट कर दे दे, और सुला दे ।

[**दोनों सोते हैं । पक का प्रवेश**]

पक : ढूंढ चुका मैं सारा कानन
वह एथेन्स निवासी मुझको दिखा न पल क्षण,
जिसके नयनों पर है मुझको मधुर कुसुम का
रस डालना कि उसका प्रेम जगे झट उभड़ा ।
रात और निस्तब्धा है, हैं ? ये यहाँ कौन हैं ?
यह एथेन्स के वस्त्र पहन लेटा विमौन है,
यही यही है, जिसको मैं प्रभु की आज्ञा से
ढूंढ रहा था, यही यही है तिरस्कृता उसकी बाला रे
दोनों गहरी नींद सो रहे गँदली भू पर !
केवल है आकाश विजन इन दो के ऊपर
सुन्दरि बाला ! साहस इतना भी न कर सकी

सोती निठुर पिया के बिल्कुल पास मस्त सी।
यह दाक्षिण्य विहीन और निष्ठुर है कितना,
तो ले कुसुम ! मिटा दे इसका यह कटु बनना।
अपनी सारी शक्ति लगा दे जादू कर दे,
जब यह जागे इसको तू परिवर्तित कर दे,
जागे, पलकें खुलें, दृष्टि जब पड़े प्रिया पर,
पलकों पर से प्रेम उतर कर मिले विहँस कर।
जब मैं जाऊँ तभी जागना,
मुझको ओबेरोन निकट अब जल्दी जाना।

[प्रस्थान]

[डेमेट्रियस और हेलेना का भागते हुए प्रवेश]

हेलेना : आह प्राण तुम मुझे मार कर ही जो जाओ।

डेमेट्रियस : मैं कहता हूँ, सावधान अब
और न कर तू पीछा मेरा।

हेलेना : क्या तुम मुझको अंधकार में छोड़ जाओगे,
हाय न ऐसा करना प्रियतम !

डेमेट्रियस : अपने ही साहस पर रह तू। मैं तो अब से
देख अकेला ही जाऊँगा।

[प्रस्थान]

हेलेना : आह दौड़ते हुए इस तरह पीछे पीछे
मैं हूँ थकी हुई कितनी हा,
जितनी विनती की उतना ही पाया मैंने तिरस्कार है।
अरे हर्मिया कितनी है सौभाग्यशालिनी,
भले कहीं वह रहे, क्योंकि हैं
उसके नयन बहुत आकर्षक मोहक उज्ज्वल !

कैसे हैं वह ! क्या खारे आँसू उनको ऐसा करते हैं ?
मेरे भी तो नयन अश्रु से बहुत धुले हैं।
नहीं नहीं, मैं तो कुरूप हूँ जैसे भालू।
जो मिलते हैं जंतु मुझे वे डरे हुए से
भाग भाग जाते हैं कैसे !
क्या आश्चर्य्य कि डेमेट्रियस भी भागा जाता
मेरी उसे उपस्थिति इतनी अप्रिय लगती,
जैसे दैत्य देख कर सब हैं बिजका करते।
ओ दुरन्त अति क्रूर नीच दर्पण वह मेरा
जिसने मुझको सुघर हर्मिया के सुन्दर उज्ज्वल
नयनों से
अपनी तुलना करने का साहस दे डाला !
पर यह कौन यहाँ है ? लाइसैन्डर धरती पर !!
मृत है ? या है सुप्त ! नहीं है रक्त यहाँ पर,
नहीं घाव है,
लाइसैन्डर यदि जीवित हो तुम, तो फिर जागो !

लाइसैन्डर : (जाग कर) अहा तुम्हारे लिये अग्नि में भी चलने में
भीत न होऊँगा मै प्रेयसि !
आह हेलेना ! तुम सौंदर्य्य पारदर्शी हो !
प्रकृति कला का चमत्कार तुम में दिखलाती।
अरे तुम्हारे वक्ष मधुर में से मुझको है हृदय तुम्हारा
स्पष्ट दीखता।
डेमेट्रियस कहाँ है ? बोलो वह जघन्य है
मेरी यह तलवार-धार पर कट जाने के ही लायक वह !

हेलेना : कहो नहीं ऐसा लाइसैन्डर ! ऐसा निश्चय,

क्या है यदि हर्मिया तुम्हारी उसको प्रिय है ?
फिर भी तो हर्मिया प्यार करती है तुमसे,
यही नहीं क्या बहुत कि तुमको शांति दे सके ?

लाइसैन्डर : अरे हर्मिया को जाने दो।
इसके संग बिताये क्षण से ऊब गया मैं।
मुझे हर्मिया नहीं, प्रेम है तुमसे मेरी सुघर हेलेना !
तर्कों से मनुष्य की इच्छा डोला करती,
पर ऋतु आने के पहले फल कब पकता है ?
अब तक मैं था अपरिपक्व, अविवेकी सचमुच,
अब जो मुझ में बुद्धि आ गई,
मैं उचितानुचितों का हूँ यह ज्ञान पा गया,
प्रिये तुम्हारे नयनों की ही ओर ठेलता
जाता है मुझको विवेक तो,
नयन तुम्हारे ! आह प्रेम की सुन्दर पुस्तक से
समृद्ध हैं—
मुझे दीखती उनमें कितनी मीठी मधुर
प्रेम की गाथा !

हेलेना : क्या इतने कटु व्यंग्य और विद्रूप हेतु ही
हुआ जन्म था मेरा बोलो !
क्या मैंने है किया कि तुमने इतनी घृणा हाय बरसाई
मेरे ऊपर !
क्या यह ही है नहीं हाय काफी मुझको, हाँ काफी मुझको
डेमेट्रियस स्नेह से मुझको नहीं देखता, हाय नहीं
देखेगा मुझको,
क्या मेरे अभाव की तुमको भी निर्मम कचोट

करनी है ?
हे भगवान ! शपथ है ! यह अन्याय गहन है,
कैसी घृणा प्रेम के छद्मों में प्रगटी है,
बिदा, सत्य कहती हूँ जब तुम विवश कर रहे
मैंने समझा था तुमको सज्जन विनम्र ही।
आह ! हाय मैं तिरस्कृता जो एक पुरुष की,
पुरुष दूसरा मुझसे है उपहास कर रहा !

[प्रस्थान]

लाइसैन्डर : उसने है हर्मिया न देखी। अरी हर्मिया तू सोती रह,
अब लाइसैन्डर के समीप तू कभी न आना।
मिष्टान्नों की अति भी तो है अरुचि जगाती
नास्तिकता है जैसी अपनी घृणा जगाती,
मैं भी तुझ से घृणा, घृणा करता हूँ अब तो !
जो कुछ शक्ति प्रेम तुम पर था अब वह सारा
हेलेना पर जा केन्द्रित हो, वह मेरी हो !

[प्रस्थान]

हर्मिया : (जाग कर) मुझे बचाओ लाइसैन्डर ! तुम मुझे
बचाओ !
मेरी छाती पर यह देखो साँप चढ़ रहा, इसे हटाओ !
हे री करुणे ! वह सुपना था !! लाइसैन्डर ! देखो
मैं अब तक
काँप रही हूँ, मुझे लगा था साँप हृदय खाता था मेरा
और मुझे मरते निहार तुम निष्ठुरता से मुस्काते थे !
लाइसैन्डर !! हैं, यहाँ नहीं हो ! लाइसैन्डर !
स्वामी ! क्या अब तुम

सुन न रहे हो ? चले गये हा ! शब्द नहीं, ध्वनि
हीन, बात तक कही न मुझसे ?
अरे कहाँ हो ? बोलो बोलो ! सुन न रहे हो ?
उन प्रेमों की याद करो कुछ ! हाय भीत मैं
मूर्च्छित होती !
नहीं ! नहीं तुम पास स्पष्ट मैं देख रही हूँ ।
प्राण ! मृत्यु या तुम्हें शीघ्र ही पा लूँगी मैं ।

[प्रस्थान]

तीसरा अंक

दृश्य १

[वन। टिटनिया सो रही है। क्विन्स, स्नग, बौटम, फ्लूट, स्नाउट और स्टारवेलिंग का प्रवेश]

बौटम : क्या हम सब आ गये ?

क्विन्स : अरे वाह ! क्या लाजवाब जगह है रिहर्सल करने के लिये। यह हर-भरा मैदान—छोटा-सा—हमारा रंगमंच होगा, यह झाड़ी हमारा नेपथ्य, अब ऐसा ही कर डालें जैसे ड्यूक के सामने ही करना है।

बौटम: पीटर क्विन्स·····

क्विन्स : क्या है बकबकिया बौटम ?

बौटम : पाइरैमस और थिस्बी के सुखान्त नाटक में कुछ ऐसी चीज़ें हैं जो कभी अच्छी नहीं लग सकतीं। पहले तो पाइरैमस इसमें आत्महत्या करने को तलवार खींचेगा जिसे बड़े घरानों की स्त्रियाँ बिलकुल बर्दाश्त नहीं कर सकेंगी। इसका जवाब दो !

स्नाउट : माता मेरी की सौगंध ! बड़ा डरावना रहेगा।

स्टारवेलिंग : मैं समझता हूँ कि मौत को हटा दिया जाये जब सब काम हो जाये।

बौटम : अजी बिल्कुल नहीं। मैं बताऊँ तरकीब, सब ठीक हो जाये। एक प्रारंभिक वक्तव्य कविता में लिखा जाये जिसमें यह कहा जाये कि हम अपनी तलवारों से कुछ नुकसान करना नहीं चाहते और पाइरैमस नहीं मरा, बल्कि ज़्यादा तसल्ली दे देने के लिये, उनसे

कहा जाये कि मैं पाइरैमस असल में पाइरैमस नहीं हूँ, बल्कि बौटम—बुनकर हूँ और इससे उनका डर दूर हो जायेगा।

क्विन्स : अच्छी बात है। वक्तव्य लिखा जायेगा और उसे आठ और छः चरण वाले छंद में लिखा जायेगा।

बौटम : नहीं दो और बढ़ा दो ! आठ और आठ कर दो।

स्नाउट : अच्छा स्त्रियों को शेर से डर नहीं लगेगा ?

स्टारवेलिंग : मुझे तो इसका बड़ा डर है, यकीन मानना।

बौटम : भाइयो ! कलाकारो ! आपको आख़िर ख़ुद भी तो कुछ सोचना चाहिये। भगवान बचाये, औरतों में एक शेर को ले आना, कितनी भयानक चीज़ है। भला जीते-जागते शेर से ज़्यादा डरावना क्या होगा। ऐसा करना तो बड़ा खौफ़नाक जुर्म है। हमें इस पर ज़रूर ध्यान देना चाहिये।

स्नाउट : तब एक वक्तव्य इसका भी जोड़ दिया जाये जिसमें कहा जाये कि वह शेर नहीं है।

बौटम : नहीं, तुम्हें उसका नाम बताना चाहिये, बल्कि अभिनेता का आधा चेहरा भी शेर की गर्दन में से दीखता रहना चाहिये और उसे खुद बोलना चाहिये कि 'देवियो...' या 'सुंदर देवियो, मैं अनुनय करता हूँ', या 'मैं निवेदन करता हूँ', या 'मेरी प्रार्थना सुनिये—डरिये नहीं, काँपिये नहीं ,आपकी जान के लिये मेरी जान हाज़िर है। अगर आप यह समझती हैं कि मैं यहाँ शेर बनकर आया हूँ, तो इससे बढ़ कर अफ़सोस की बात मेरे लिये और क्या होगी ? नहीं, मैं ऐसी कोई चीज़ नहीं हूँ, मैं तो औरों की तरह ही एक आदमी हूँ।' और बस उस वक्त उसे अपना नाम बताना चाहिये। साफ़-साफ़ कह दे, मैं हूं स्नाउट—

UNIVERSITY

क्विन्स : ठीक है, ऐसा हो जायगा। लेकिन मुश्किलें हैं। वह यह कि

चाँदनी को भीतर कमरे में लाना है क्योंकि तुम तो जानते ही हो कि पाइरैमस और थिस्बी की मुलाकात चाँदनी में हुई थी।

स्नाउट : जिस रात हम नाटक करेंगे उस दिन चाँदनी निकलेगी ?

बौटम : कैलन्डर लाओ कैलन्डर। पञ्चाङ्ग में देखो। चाँदनी को ढूंढो। चाँदनी को ढूंढो।

क्विन्स : हाँ, उस रात चाँदनी छिटकेगी।

बौटम : तब तो एक खिड़की बना दी जायेगी जिसमें से चाँदनी आ जायेगी। उसे खोल देंगे।

क्विन्स : या फिर एक काम किया जाये। एक कँटीली झाड़ी और लालटैन ले कर एक आदमी आ जाये और कह दे कि वह चाँदनी बन कर आया है। अच्छा अब दूसरी परेशानी सुनो। हमें बड़े कमरे की दीवाल भी चाहिये। क्योंकि कहानी में पाइरैमस और थिस्बी उस दीवाल के छेद में से बातें करते हैं उधर खड़े हो कर।

स्नाउट : दीवाल तो तुम कभी ला ही नहीं सकते। क्या राय है बौटम !

बौटम : किसी आदमी को ही दीवाल बनना पड़ेगा। उस पर कुछ पलस्तर चढ़ा रहे, कुछ चूना, कुछ अनगढपन हो, ताकि वह दीवाल-सा लगे। वह अपनी उँगलियाँ ऐसे रखे और उनके छेद से पाइरैमस और थिस्वी बातें कर लेंगे।

क्विन्स : अगर यह हो गया, तो सब ठीक है। आओ बैठें, हर माई का लाल आये। चलो रिहर्सल कर लें। पाइरैमस ! तुम शुरू करो। जब तुम अपनी बात खतम कर चुको तो उस झाड़ी में घुस जाना, ऐसे ही हर एक करना।

[पीछे से पक का प्रवेश]

पक : अरे कौन हैं ये उजड्ड शेखी भरते यों
परियों की रानी की शैय्या के समीप ही ?
अच्छा ! तो नाटक होने की तैयारी है !
तब मैं इसकी जाँच करूँगा,
अगर ज़रूरत समझूंगा तो बन जाऊँगा
अभिनेता भी।

क्विन्स : बोलो पाइरेमस ! थिस्बी ! खड़ी हो जाओ इधर।

बौटम : थिस्बी ! गंधायमान यह मधुर कुसुम·····

क्विन्स : गंधायमान ! गंधायमान !

बौटम : गंधायमान यह मधुर कुसुम, प्रेयसि ऐसी
है साँस तुम्हारी हे थिस्बी !
यह कैसी ध्वनि ! हैं ? सुनो ! अरे
मैं आता हूँ लो दो क्षण में···
आता हूँ देखो अभी अभी···

[प्रस्थान]

पक : कभी न आया यहाँ कभी ऐसा पाइरेमस···
लाजवाब है···

[प्रस्थान]

फ्लूट : अब मुझे बोलना है ?

क्विन्स : हाँ जी, तुम्हें ही। पर यह समझ लो कि बाहर कोई आहट हुई है, वह उसे देखने भर गया है और अभी आ जायेगा।

फ्लूट : ओ पाइरैमस ऊर्ज्जस्वित यौवन गरिमामय,
अरे श्वेत अति भव्यकुसुम से ज्योतित सुंदर
जैसे किसी कटीली दुर्गम झाड़ी पर गुलाब हो कोई,

कितना यौवन यह उन्नद्ध ! यहूदी है उपनाम बना ज्यों
सुंदर शोभित !
घोड़े जैसे वफ़ादार, जो कभी न थकता,
तुम्हें मिलूंगा पाइरैमस ! फिर
मैं निन्नी की उस समाधि के पास·····

क्विन्स : निन्नी नहीं निनस।[1] क्या यार तुम ? यह अभी से क्यों बोल गये ? यह तो तुम्हें पाइरैमस को जवाब देना है। तुम तो अपना सारा पार्ट एकदम बोल पड़े ! यह नहीं देखा कि यह संवाद कितने टुकड़ों में है और दूसरे के वाक्यों का आखिरी शब्द भी आपने अपने वाक्य में ही जोड़ डाला। पाइरैमस आता है, तुम्हारी बात खतम होती है—बस थकता पर।

फ्लूट : ओह !
अच्छे से अच्छे घोड़े-सा जो न कभी भी सचमुच थकता।

[पक का पुनः प्रवेश। संग में बौटम है, पर अब उसके कंधों पर उसका सिर नहीं गधे का सिर है।]

बौटम : सुंदरि थिस्बी! यदि मैं मैं हूँ, तो केवल मैं तो तेरा ही हूँ।

क्विन्स : भयानक ! भूत ! अद्भुत ! पिशाच आ गया ! भाइयो भागो ! बचाओ ! बचाओ !

[क्विन्स, स्नग, फ्लूट, स्नाउट और स्टारवेलिंग का भागना]

पक : किंतु करूँगा मैं तो पीछा अभी तुम्हारा
दौड़ाऊँगा तुम्हें खूब मैं, दलदल, झाड़ी
झाड़, फाँस में,

---

१. बाइबिल में वर्णित निनेव नगर का किंवदन्तियों में वर्णित निर्माता, बेबीलोन की रानी सेमीरैमिस का पति।

कभी बनूंगा घोड़ा, कभी शिकारी कुत्ता, सूहर,
या भालू मैं बनूं निमुण्डा, आग कभी मैं,
हिनहिनाऊँगा, फिर भौंकूंगा, ग्रन्ट करूँगा,
गरजूंगा या मैं धधकूंगा क्रमशः
घोड़ा, कुत्ता, सूहर, भालू, अग्नि बना बारी-बारी से।

[प्रस्थान]

बौटम : यह लोग भाग क्यों रहे हैं ? यह मुझे डराने के लिये इन लोगों की बदमाशी है।

[स्नाउट का पुनः प्रवेश]

स्नाउट : ओ बौटम ! तुम तो बदल गये हो ! मैं तुम पर यह क्या देख रहा हूँ ?

बौटम : क्या देख रहे हो ? अपनी जैसी गधे की खोपड़ी देख रहे हो ! है न ?

[स्नाउट का प्रस्थान, क्विन्स का पुनः प्रवेश]

क्विन्स : भगवान तुम्हें बचायें बौटम ! भगवान रक्षा करें। तुम तो बिल्कुल बदल गये हो !

[प्रस्थान]

बौटम : अब समझा इनकी बदमाशी। वे मुझे गधा बनाना चाहते हैं ? मुझे डराना चाहते हैं ? काश वे ऐसा कर सकते ! लेकिन मैं यहाँ से टस से मस नहीं होऊँगा। कर लेने दो उन्हें, जो चाहें कर लें ! मैं तो यहीं टहलूंगा और यहीं गाऊँगा और वे भी सुन लें कि मैं डरा नहीं हूँ।

[गाता है।]

काला मुर्गा रँग का स्याह
पीली पीली चोंच, भोला,

थ्रीसल चिड़िया गाना गाये,
रैन चिड़िया ले पंख पोला,

टिटानिया : (जाग कर) इस कुसुमों की शैय्या से यह कौन भला-सा
देवदूत है मुझे जगाता·····

बौटम : [गीत]

फिन्श, लार्क औ' अबाबील औ'
गाती कुक्कू मस्त हाँ हाँ
उसका गीत अनेकों सुनते
मना न करते सुन कर हाँ हाँ ··

और यह सच है कि चिड़िया की बेवकूफ़ी से टक्कर लेने को किसके पास फालतू दिमाग़ है ? चिड़िया से कौन झूंठ बोले ? 'कुक्कू' पुकारा करे, पर ऐसा कभी नहीं होता।

गाओ फिर प्रिय मधुर मर्त्य हे, विनय कर रही हूँ
मैं तुमसे,

टिटानिया : गीत तुम्हारा सुन कर मेरी श्रुति में कैसा अमृत बरसता,
देख तुम्हारा रूप नयन मेरे पुलकित हैं,
आह तुम्हारे गुण को बरबस मेरे मुँह से कहलाते हैं
प्रथम दृष्टि में ही मैं तुम पर रीझ गई हूँ,
शपथ सत्य है, मुझे प्यार है तुमसे गहरा !

बौटम : श्रीमती ! मुझे तो आपके ऐसे कहने की कोई वजह दिखाई नहीं देती ! और सच तो यह है कि आजकल विवेक और प्रेम साथ-साथ तो रहते ही नहीं। और क्या अफ़सोस की बात है कि कोई भला मानस पड़ोसी भी उनमें दोस्ती नहीं कराता। नहीं, मैं मौक़े पर दिल्लगी उड़ा सकता हूँ।

टिटानिया : जितने हो सुन्दर उतने हो बुद्धिमान भी !

बौटम : नहीं, बिकुल ग़लत। अगर मुझमें इस जंगल से भाग निकलने की अक़ल होती तो ज़रूर मैं इससे अपनी नौकरी बजवा लेता।

टिटानिया : इस वन से जाने की इच्छा करो न किंचित् !
तुम चाहो या नहीं, किंतु इस कानन में ही
रहना होगा तुम्हें, जान लो,
मैं साधारण परी नहीं हूँ ;
मेरे शासन में रहती है ग्रीष्म सुहावन,
और प्रेम है मुझको तुमसे, चलो संग अब मेरे आओ
मैं दूँगी परियाँ तुमको जो,सतत तुम्हारी तन्मय हो कर
सेवा नित्य करेंगी, सचमुच
महासिंधुओं में से उज्ज्वल रत्नों को वे ले आयेंगी
देंगी तुमको, गीत सुना कर तुम्हें रिझायेंगी
मीठे स्वर गुंजित करतीं,
जब तुम फूलों की शय्या पर सुखनिंदिया में प्रिय
सोओगे।
और तुम्हारी मर्त्य स्थूलता इस प्रकार मैं
दूर करूँगी तुमसे, तुम भी परिस्तान के प्राणी
जैसे ही दीखोगे !
अरे पीज़ ब्लौसम ! मस्टर्ड सीड, आओ हे मौथ !
कौबवैब !

एक परी : प्रस्तुत हूँ मैं···
दूसरी परी : मैं भी तो हूँ,
तीसरी परी : मैं हूँ देखो···
चौथी परी : लो मैं भी हूँ।

सब : कहाँ जायें हम ?

टिटानिया : इन सज्जन के प्रति विनम्र हो रहो सभी तुम
जब यह चलें चलो तुम इनके संग नाच कर,
करो किलोल रिझाओ इनको,
औ' अखरोट और वन के मीठे फल लाओ
हरे-हरे अंजीर बैंगनी अंगूरों के गुच्छे लाओ
इस सम्मानित मधुर अतिथि को खूब खिलाओ।
दीना ममाखियों के मधु के छत्ते लाओ चुरा चुराकर
उनकी मोमिल जाँघें काट लाओ बत्ती सी
उन्हें बना कर जुगनू के नयनों की उज्ज्वल
दीप्त शिखाओं पर सुलगाओ
विभावरी में,
मेरे प्रियतम को शैया पर ले जाओ औ' निद्रित कर दो
और जगाओ !
रगबिरंगी सुघर तितलियों के रंगीन पंख तुम लाओ
इनके मुद्रित नयनों से रश्मियाँ चंद्र की
उन पंखों से झलो उन्हें पंखा सा लेकर।
शीश झुकाओ इन्हें अरे तुम नमस्कार कर
परियो ! आओ।

एक परी : अहे मर्त्य हो विजय तुम्हारी।

दूसरी परी : जय हो ! जय हो !

तीसरी परी : जय हे ! जय हे !

चौथी परी : जय जय ! जय जय !

बौटम : हे श्रीमान् ! हृदय से कहता हूँ मुझ पर दया करें। पूजनीय

का शुभ नाम क्या है ! जान सकता हूँ ?

कौब वैब : कौब वैब !

बौटम : ज़रा और कुछ जानकारी हासिल करा देते श्रीमान् कौबवैब अपनी ! अगर मैं अपनी उंगली काट लूं तो आपसे मेरी हिम्मत खुल जाये। श्रीमान् आपका शुभ नाम ?

पीज़ ब्लौसम : पीज़ ब्लौसम !

बौटम : मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप कृपया श्रीमती स्क्वैश[1], अपनी माता और श्रीमान् पीस्कौड[2] अपने पिता को मेरी याद दिला देते। श्रीमान् ! आपसे तो मैं और भी परिचित होना चाहूँगा। हाँ, आपका क्या नाम है श्रीमान् ?

मस्टर्ड सीड : मस्टर्ड सीड !

बौटम : अच्छा श्रीमान् मस्टर्ड सीड ! आपका धैर्य्य तो मैं खूब जानता हूँ। वह जो कायर है न ? दानव जैसा साँड़ ! वह आपके घराने के कितने ही भलेमानसों को चबा कर खा चुका है। आपके घराने की बरबादी ने तो मेरी आँखों में आँसू भर दिये ! श्रीमान् मस्टर्ड सीड ! आपसे मैं और जानकारी पाना चाहता था।

टिटानिया : आओ इनकी सेवा करो, ले चलो इनको
मेरे फूलों की झुरमुट में, मधुर कुञ्ज में,
चंद्रकला[3] भी नयन पनीले ले कर देखो देख रही है,
जब वह रोती है तब रोता है हर एक कुसुम लघुतम भी,
किसी विवश बंधन अभिलाषी का विलाप कर,
आह बाँध दो मेरी जिह्वा सुघर प्रेम की,
इन्हें शांति से ले आओ तुम !

[प्रस्थान]

---

१. रस २. मटर ३. शशि स्त्रीलिंग है अंग्रेज़ी में—यूरोप में।

दृश्य २

[वन का अन्य भाग]

[ओबेरोन का प्रवेश]

ओबेरोन : टिटानिया जागी है अब तक या सोई है ?
जगते ही क्या आया होगा सबसे पहले
दृष्टिपंथ में उसके जिस पर वह तन मन से
न्यौछावर हो गई भूल होगी सब कुछ को !

[पक का प्रवेश]

लो यह आया है मेरा संदेसा लाने-
वाला प्रिय है दूत, कहो अब मुझसे
ओ मतवाले !
समाचार है क्या बतलाओ
परिस्तान का आज निशा में ?

पक : मेरी स्वामिनि पड़ी हुई हैं एक दैत्य के कठिन प्रेम में !
वहीं कुञ्ज में हैं वह अपने मधुर छाय में,
सोई थीं जब शिथिल अंग वह
आये कुछ कारीगर वहाँ अधम श्रेणी के
जो एथेन्स की दूकानों में रोटी अपनी जुटे कमाते
अनगढ़ से रबूद, हे स्वामी !
नाटक एक रचाने को अभ्यास कर रहे
अहे थीसियस के विवाह के वैभव को द्विगुणित
करने को,
उनमें सबसे मूर्ख और जड़ खोंखल-सिर जो
पाइरैमस का पाठ कर रहा था, वह अपना

करके पार्ट तनिक झाड़ी में पहुंचा ज्योंही
मैंने उसको घेर लिया मौका झट पा कर,
तुरत गधे का सिर उसके चेहरे पर मैंने
चढ़ा दिया तब,
तभी उसे अपनी थिस्बी को उत्तर देने
नाटक में था पुनः पहुँचना,
बस फिर तो दिल्लगी हुई आरंभ वहीं से।
संग साथियों ने जब उसके, उसको देखा,
तो जैसे लुक छिप करके रंगते ब्याध को
देख जंगली बतखें सहसा,
या मटमैले लाल पाँव के कौए डर कर
काँव-काँव कर उड़ते हैं आवाज़ अचानक
सुन बंदूक कठिन की आतुर,
बिखर-बिखर कर उड़ते हैं नभ में घबराये
त्यों उसको निहार कर उसके संगी साथी
डर कर भागे।
पगध्वनि और हमारी सुन कर
गये लड़खड़ा गिरते पड़ते एक दूसरे पर टकराते
'खून खून' चिल्लाते देते वे एथेन्स की घोर दुहाई,
बुद्धि दीन से डर के मारे काँप उठे जो सबल हो उठा।
यों विवेक खो बैठे उल्टे सीधे करने लगे काम वह।
काँटे भी चुभ गये बिंध गये उनके तन में,
कपड़ों में, टोपी में, सब में गड़े निठुर वे,
उस भय में मैंने उनको तब दूर भगाया,

और परम सुन्दर उस पाइरैमस को मैंने
वहीं रूप-परिवर्तित छोड़ा,
ऐसा हुआ कि बस उस क्षण ही
जागी टिटानिया और पहली दृष्टि उसी पर
पड़ी अचानक, और तुरत ही
पड़ी गधे के महा प्रेम में रानी सहसा।

ओबेरोन : बहुत श्रेष्ठ हो गया कि मैंने नहीं कल्पना भी की इसकी।
पर क्या तूने
उस एन्थेस निवासी की आँखों में भी क्या
डाल दिया मधु उसी कुसुम का, जैसे मैंने
आज्ञा दी थी तुझे कि तू अवश्य करना यह ?

पक : मैंने उसको सोते पाया। काम कर दिया वह भी मैंने,
थी एथेन्स की युवति पास ही सोती उसके,
जब जागेगा वह अवश्य देखेगा उसको !

[**हर्मिया और डेमेट्रियस का प्रवेश**]

ओबेरोन : इधर खड़े हो हट कर देखो
यह ही है वह पक ! एथेन्स निवासी, है न ?

पक : वही वही है स्त्री पर यह वह पुरुष नहीं है।

डेमेट्रियस : आह प्रेम करता जो तुमसे उसका इतना
क्यों करती हो तिरस्कार तुम ?
किसी क्रूर रिपु पर ही अपना तिक्त रोष यह
तुम बरसाना।

हर्मिया : तिरस्कार करती हूँ केवल, किंतु मुझे तो
कहीं अधिक करना कुछ तुमसे और चाहिये।

मुझे लग रहा, तुमने मुझे दिया है कारण
जो मैं तुम्हें शाप भीषण दे सकूँ मुक्त स्वर।
यदि तुमने ही लाइसैन्डर की सोते में हत्या की है तो
ओ रुधिरार्द्र ! मुझे भी मारो ! खो दो मुझको घन
गंभीर में।
नहीं सूर्य्य भी हो सकता है दिन के प्रति इतना सच्चा सच
जितना था लाइसैन्डर मुझको !
क्या सोती हर्मिया छोड़ वह जा सकता था ?
मैं मानूंगी सहज कि धरती ऊब चुकी है,
चंद्र मध्य में से खण्डित होगा,[1]
पर तुम हत्यारे हो नहीं, नहीं मानूंगी,
तब ही तो तुम इतने भीषण हो गंभीर हो !

डेमेट्रियस : बँधा हुआ हूँ, तभी लग रहा हूँ मैं ऐसा,
यह कठोर निर्दयता तेरी बेध गई है मेरे उर को।
ओ बधिके ! फिर भी तू कितनी सुंदर लगती
जैसे शुक्र नखत लगता है नील व्योम में !

हर्मिया : लाइसैन्डर की बात त्याग दी ? अरे कहाँ वह ?
डेमेट्रियस सुजन बतलाओ, क्या तुम उसको
नहीं सौंप दोगे फिर मेरे इन हाथों में ?

डेमेट्रियस : मैं उसका शव दूंगा अरे शिकारी भीषण कुत्तों को ही।

हर्मिया : ओ कुत्ते ! ओ अधम श्वान ! तू विवश कर रहा
मुझे कि मैं कौमार्य्य-धैर्य्य की मर्यादा का

१. मूल में एक कथा का उल्लेख है जिससे हिन्दी में प्रवाह रुकता है; अतः भावानुवाद किया है।

उल्लंघन कर जाऊँ निश्चय !
तब तूने ही उसकी हत्या की है ?
अब से तेरी गणना हो न मनुष्यों में सच !
मेरे हित कह, एक बार तो सच कह दे तू !
क्या तूने जगते में उसको देखा था तब ?
या तूने सोते में उसकी हत्या की है ?
आह सर्प क्या इतना काम न कर सकता था !
पर जघन्य ओ नाग ! सर्प दो जिह्वा वाला
तेरे संमुख क्या है ? तू हे विष का निर्झर !

डेमेट्रियस : अरे व्यर्थ ही मुझ पर क्यों हो दोष लगातीं !
मैं लाइसैन्डर की हत्या का अपराधी हूँ नहीं कभी भी !
कह सकता हूँ केवल इतना, मरा नहीं है वह निश्चय ही !

हर्मिया : विनती करती हूँ बतला दो ! सकुशल है वह ?

डेमेट्रियस : बतला देता, पर उससे क्या मुझे मिलेगा ?

हर्मिया : एक विशेष मिलेगा वह अधिकार तुझे भी,
फिर न देख पायेगा मुझको,
तेरी घृणित उपस्थिति से मैं बच जाऊँगी,
वह जीवित हो या मृत हो पर मुझसे तू तो
कभी न मिलना।

[प्रस्थान]

डेमेट्रियस : ऐसे भीषण क्रोधग्रस्त क्षण में इससे मिल
क्या पाऊँगा,
यहीं रुकूं इसलिये तनिक मैं।
आह दुःख का भार और भी बोझिल बनता,

दिवालिया निदियाँ कर्ज़े में दुख के डूबी,
उसे चुका दूं ! हाय थक गया हूँ मैं कितना !
रुक जाऊँ मैं यहीं श्रांत हो गया हाय मैं ।
[लेटता है, सो जाता है ।]

ओबेरोन : यह तूने क्या कर डाला पक ! तूने तो यह
बड़ी भूल कर डाली ! जा कर डाला तू ने
सच्चे प्रेमी की आँखों में मधु-सुकुसम ।
तेरी इसी भूल के कारण सच्चा प्रेम बिगड़ने को है,
और नहीं होगा सच्चा अब झूंठा भी तो वह ।

पक : भाग्य ! भाग्य शासन करता है,
एक मनुज है सत्य धारता,
लाखों झूंठी शपथें खा कर हारा करते ।

ओबेरोन : वायु वेग से जा कानन में
तू एथेन्स की हेलेना को ढूंढ तुरत ही,
वह दुखियारी, पाण्डु पड़ गई, प्रेमोच्छ्वासों
में यौवन का रूप खो रही ।
किसी तरह भ्रम फैला कर तू उसे यहाँ ला,
मैं इसकी आँखों पर अब जादू करता हूँ
खुलें नयन तब वह आ जाये संमुख इसके ।

पक : जाता हूँ, जाता हूँ, देखो अब जाता हूँ,
मैं तातार-धनुष से छूटे द्रुतगति शर सा
चला पवन पर, त्वरित चपल चल चरण चला यों ।
[प्रस्थान]

ओबेरोन : यह बैंगनी रंग का फूल
मन्मथ-शर से आहत फूल,

इसे नयनतारा में इसकी
मैं निचोड़ दूँ, जगे प्रीत ही
जब देखे यह प्रेयसि अपनी,
लगे इसे वह रूपसि सजनी !
जैसे शुक्र व्योम मे दिखता
उज्ज्वल निर्मल चमचम करता।
जय हो उसकी सुन्दरता की,
अरे पुरुष ! खुल नयन तुम्हारे
करें याचना उससे झुककर
मधुर प्रेम की हर्ष, जगा रे !

[पक का पुनः प्रवेश]

पक : ओ जय ! परिस्तान के राजा,
हेलेना यह रही आ गई,
और युवक वह जिसको मैंने
पहले डेमेट्रियस समझा था
उससे प्रेम याचना करता।
देखेंगे यह नयी दिल्लगी ?
हे प्रभु ! कैसे मूर्ख लोग हैं
मर्त्य भला यह !

ओबेरोन : अरे उधर हट !
उनका कोलाहल डेमेट्रियस
की निद्रा को भंग करेगा !

पक : तब ये दोनों पुरुष करेंगे
उसी एक स्त्री से सहसा ही प्रेम याचना,
वह क्या नहीं होगी दिल्लगी नयी ही ?

वह जो संकट अद्‌भुत बनकर सहसा छाते
मुझमें वे ही अधिकाधिक आनन्द जगाते।

[लाइसैन्डर और हेलेना का प्रवेश]

लाइसैन्डर : भला सोचती क्यों हो मैं सच
तिरस्कार से प्रेम याचना करता हूँ यह।
घृणा कभी आती अश्रुओं में हे सुंदरि !
देखो जब मैं शपथ ग्रहण करता हूँ आँसू बह आते हैं,
शपथों का जब जन्म आसुओं में हो बाले !
उसे असत्य न समझो जग में।
यह सब तुमको मुझमें क्यों है घृणा दीखता,
श्रद्धा स्नेह फहरते आगे, कैसे दूं प्रमाण मैं इसको
सत्य बना दूं ?

हेलेना : अरे तुम्हारी चालाकी बढ़ती जाती है,
सत्य सत्य का जब करता है हनन ! अरे यह
है शैतानों की पवित्रता की छलना ही !
यह हैं वही शपथ जो की थीं तुमने पहले
सुघर हर्मिया से, क्या तुम उसको त्यागोगे ?
एक ओर जो मुझसे की हैं और कर चुके जो तुम
पहले सुघर हर्मिया से लाइसैन्डर !
इन शपथों को एक तुला के दो पलड़ों पर
रख कर यदि तोला जायेगा,
तो दोनों का भार एक सा होगा केवल कहानियों सा,
हलका फुल्का, जिसमें कोई सत्य नहीं होगा,
न भार ही !

लाइसैन्डर : मुझे नहीं था ज्ञान तनिक जब

उससे कभी प्रतिज्ञा की थी।

हेलेना : मुझको लगता, वही हाल है अब भी जब तुम
त्याग रहे हो उसे अचानक।

लाइसैन्डर : डेमेट्रियस प्यार करता है उसको देखो,
और प्यार करता न तुम्हें वह !

डेमेट्रियस : (**जाग कर**) आह हेलेना ! देवि ! अप्सरे !
दिव्य ज्योति ! कितनी सुंदरि हो तुस तिलोत्तमा !
प्रेयसि ! किस से तुलना करूँ तुम्हारे इन सुंदर
नयनों की ?
स्फटिक कहाँ है इतना निर्मल !
यह दाड़िम दशना छवि कैसी भव्य उजागर !
इन अधरों की सुघर लालिमा अकथनीय है,
सलज हिमानी सा कर कितना श्वेत पूत है,
प्राची के मृदु मंद मलय सा कंपित करतीं !
गरिमा के इस मधुर कोष ! इस दुग्ध धवल से
घनीभूत सौंदर्य्य अमल को
मुझे चूम लेने दो क्षण भर !
राजकुमारी हो तुम रूपसि ! सकल स्त्रियों में !

हेलेना : हे दुर्भाग्य ! नरक ! लगता है तुम सब मिल कर
मुझसे यह अति क्रूर कठिन उपहास कर रहे !
मैं हूँ बनी तुम्हारे हँसने को अब कोई केन्द्र बिंदु हूँ ?
यदि तुममें कुछ भी दाक्षिण्य दया है बाकी
तो क्या ऐसे मुझे कचोट छेड़ते तुम सब ?
क्या मैं नहीं जानती मुझसे घृणा तुम्हें है ?
क्या तुमको कुछ मिल जाता है मुझे छेड़कर ?

दिखते हो तुम पुरुष, पुरुष यदि तुम हो सचमुच
तो क्या एक विनम्र नारि से ऐसा दुर्व्यवहार
तुम्हें कुछ फबता है सच ?
शपथ खा रहे, और प्रतिज्ञाएँ करते हो,
अंग-अंग की स्तुति करते हो मेरे तुम यों,
जबकि ज्ञात है मुझे, घृणा मुझसे करते हो ?
तुम दोनों हो प्रतिद्वन्द्वी ही और हर्मिया
से करते हो प्रेम और अब दोनों मिल कर
प्रतिद्वन्द्वी बन गये हेलेना के पीछे ही ?
उसका ही उपहास कर रहे ?
इस दीना अबला कुमारि की आँखों में आँसू
भरना क्या
पौरुष है या कोई बड़ा काम है बोलो ?
और घृणा से चालित हो कर ऐसा करते ?
कोई भी कुलीन बाला इससे भी
अधिक और किससे दुःख पाये ?
इस व्याकुलपन के धीरज को इतना तो मत
हाय सताओ !
अरे तुम्हारा खेल हमारी मौत बन गया !

लाइसैन्डर : डेमेट्रियस ! क्रूर हो निश्चय ! रहो न ऐसे !
तुम्हें हर्मिया से है प्रेम सत्य है यह तो ।
तुम्हें ज्ञात है और ज्ञात है यह मुझको भी !
अरे हर्मिया के प्रति अपना प्रेम छोड़ कर
आया हूँ मैं सकल शक्ति से, पूरे मन से,
हेलेन मुझको दे दो, इससे सचमुच मुझको

बहुत प्यार है और करूँगा
प्यार इसे मैं मृत्यु रेख तक।

हेलेना : कभी निठुर उपहास न ऐसा हुआ कहीं भी।

डेमेट्रियस : लाइसैन्डर ! हर्मिया तुम्हारी रहे, मुझे तो
नहीं चाहिये।
कभी प्यार यदि मैंने उसको किया, किया
होगा क्या जाने ?
वह तो सब अब दूर हो गया।
एक अतिथि की भाँति हृदय यह उसे त्याग
आया है मेरा।
हेलेना घर है, मन मेरा घर लौटा है,
यहीं रहेगा, सचमुच अब वह घर आया है।

लाइसैन्डर : हेलेना ! विश्वास न करना।

डेमेट्रियस : वह विश्वास गिराओ मत तुम
नहीं जानते जिसको देखो !
अपने संकट को पहँचानो ! इसका मूल्य बहुत
मँहगा होगा यह जानो !
लो प्रेयसि आ गई तुम्हारी ! आई देखो !

[**हर्मिया का पुनः प्रवेश**]

हर्मिया : कैसी अंधियारी छाई है, गहन रात है,
ज्यों पुतली की स्याही बाहर फैल गई है,
ज़रा ज़रा सी आहट पाकर चौकन्नी होती हूँ सहसा,
नहीं दिखाई देता कुछ भी झिल्ली सी तिमिरा छाई है,
कानों में प्रतिध्वनि करता है धीमा स्वर भी
जैसे नयनों के अभाव का मोल चुकाता अंधकार है।

लाइसैन्डर ! ये मेरे नयन न तुम्हें खोज पाये
कितना चल !
बलिहारी इन कानों की जो स्वर सुन कर ही
मुझे खींच लाये इस पथ में।
पर किस निष्ठुरता के वश हो
तुमने मुझको ऐसे छोड़ा ?

लाइसैन्डर : उसे रोकता कौन जिसे उठ चल पड़ने को
प्रेम विवश करता था क्षण-क्षण !

हर्मिया : वह कैसा था प्रेम भला जो लाइसैन्डर को
हाय ले गया मुझसे यों वियुक्त कर ऐसे ?

लाइसैन्डर : लाइसैन्डर का प्रेम नहीं रुकने देता था
उसके मन को
सुंदरि हेलेना के प्रति जो आकर्षण था
उसने तो बन व्यापक मुझको घेर लिया यों।
तू क्यों मुझको ढूंढ रही है ? क्या इतना भी समझ न
पाई,
तेरे प्रति जो घृणा जगी है मेरे मन में
वही मुझे लाई है तुझसे दूर खींचकर ?

हर्मिया : क्या कहते हो ? लगता है तुम नहीं बोलते !
अरे असम्भव सा लगता है।

हेलेना : आह ! अरे तू भी है इस षडयंत्र क्रूर में
मिली हुई ही ! तीनों मिल कर एक हो गये,
मुझसे ऐसा निर्दय खेल खेलने धिक् धिक्
जब कि जानते हो मैं कितनी दुखयारी हूँ।
ओ घातक हर्मिया ! न कर ऐसा प्रहार तू !

ओ कृतघ्नतम नारी ! क्या तू मिली हुई है
इन दोनों से इस कठोर छल में मुझको ऐसे
बहलाने ?
क्या हम दोनों की ये बातें उन घड़ियों की
जो न बीतने की आती थीं, बहनापे की वे सौगंधें,
हाय अलग करने वाले जब क्रूर समय को हम दोनों
गाली देती थीं,
वह सब कुछ तू भूल चुकी है ?
बचपन के मासूम खेल, पढ़ने के दिन की घनी मिताई,
वह भी री था स्नेह, हर्मिया !
हम तुमने दो कृत्रिम विधना बन कर मिल कर
काढ़ा था न कुसुम एक ही ?
संग खेल, उठना सँग सँग था,
एक गीत गाती थीं हम तुम एक वाद्य पर
जैसे हाथ, बुद्धि, औ' सारे अंग हमारे एक हो गये थे
मिल मिल कर,
ऐसे सँग सँग बढ़ी अरे हम, एक कुसुम की
दो पंखुड़ियाँ, अलग-अलग लगती थीं, फिर भी
एक एक थीं !
एक वृन्त पर दो कलियाँ थीं मानो हम तुम ।
योद्धा के उस कवच पर लगे राज चिन्ह सी
पूरक थीं हम !
और हमारा इतने दिन का प्यार आज तुम हो
बिखेरतीं ?
मैं हूँ हाय सहेली जिसके ही विरुद्ध तुम

मिली हुई हो इन पुरुषों से ?
यह क्या है मित्रता ? नहीं है यह नार्य्योचित
मैं करती निंदा हूँ इसकी, सारी अबला यही करेंगी !
भले आज मैं हाय अकेली दुःख पा रही ।

हर्मिया : कैसा यह आवेश मुझे विस्मय होता है,
मैं तो तुमसे घृणा न करती, किंतु तुम्हारे
शब्दों में मेरे प्रति क्यों है घृणा उमड़ती ?

हेलेना : कहो नहीं क्या अपमानित करने को तुमने
लाइसैन्डर को भेजा है यों मेरे पीछे,
जो वह मेरे वदन नयन की स्तुति करता है ?
और तुम्हारा
डेमेट्रियस दूसरा प्रेमी
जिसने अभी कुछ समय पूर्व किया मुझको अपमानित
कुचला था मेरे मन को जिसने पाँवों से,
अब देवी, अप्सरा, दिव्य, बहुमूल्य, व्योम की
ज्योति कह रहा है मुझको क्यों ?
जिससे उसको घृणा उसी से ऐसी बातें ?
क्यों लाइसैन्डर प्रेम तुम्हारा ठुकराता है ?
उसके भीतर कितना था वह सिंधु सदृश जो !
मुझसे स्नेह, प्रेम अकुलाहट दिखा रहा है
क्योंकि तुम्हीं ने भेजा औ' सम्मति दी अपनी ?
क्या है यदि सुंदरी नहीं मैं हूँ तुम जैसी
तुम सा आकर्षण सम्मान न पाया मैंने,
भाग्य नहीं यदि, प्रेम न पाया, तो भी क्या है ?
पर अकांक्ष्य को प्रेम ! ! हाय दारुण है पीड़ा !

घृणा नहीं इस पर तो तुमको करुणा सजनी
करना उचित लगेगा निश्चय।

हर्मिया : नहीं समझती मैं तो तुम यह सब क्या मुझसे
कहती हो ऐसे यों लच्छे से उलझा कर।

हेलेना : अच्छा ! और बना लो तुम गंभीर वदन को !
मेरी फिरते पीठ बनाओगी मुँह अपना ?
एक दूसरे को मिचका कर आँख,खेल को जारी रखना,
यह उपहास अगर पूरा उतार लोगी तुम
लिखा जायेगा ? इसके तो फिर वर्णन होंगे ?
यदि तुममें कुछ दया, हया या ध्यान शेष है,
क्या मुझसे ऐसी निर्दयता कभी उचित है ?
किंतु बिदा ! कुछ सीमा तक तो स्वयं दोष है
मेरा ही यह,
मृत्यु, समाप्ति शीघ्र इसका निदान कर देंगे।

लाइसैन्डर : रुको प्रिये हेलेना, मेरी बात सुनो तो,
मेरी प्रेयसि, मेरा जीवन, आत्मा मेरी
सुंदरि अप्सरि ओ हेलेना !

हेलेना : अहा ! धन्य है ! क्या कहना है !

हर्मिया : प्रिय ! उसका ऐसा अपमान करो मत तुम यों !

डेमेट्रियस : यदि यह समझा सकती नहीं, करूँगा तब मैं
विवश अभी लो इसको।

लाइसैन्डर : यह हर्मिया मुझे क्या समझायेगा सुन तू !
डेमेट्रियस ! मुझे क्या विवश करेगा रे तू !
इसकी दीन विनतियों में वह शक्ति कहाँ है ?
तेरी धमकी में तो उतनी भी न शक्ति है !

हेलेना ! मैं तुम्हें प्यार करता हूँ, अपने
जीवन की सौगंध ! चाहता हूँ मै तुमको।
जो तुम कहो उसी की शपथ आज खाऊँगा
जो यह कहे कि तुमसे मुझको प्यार नहीं है
उसे प्रमाणित करने को झूँठा मैं बोलो !

डेमेट्रियस : मैं कहता हूँ इससे कहीं अधिक करता हूँ
प्यार तुम्हें मै !

लाइसैन्डर : यदि कहते ही हो तो आओ हम कर लेवें
शक्ति परीक्षण, करे प्रमाणित ! साहस है न ?

डेमेट्रियस : मैं तो आतुर हूँ लो आओ !

हर्मिया : लाइसैन्डर ! इस सबका जा कर अंत कहाँ है ?

लाइसैन्डर : दूर दूर हो अरी कलमुँही !

डेमेट्रियस : नहीं नहीं श्रीमान् ! समझ कर !
ऐसे मत कूदो उलाँघ कर ! अपनी चाल चलो हाँ,
अब भी पड़ो न सन्मुख ! जाओ जाओ !
क्या लोगे तुम ! नाजुक हो पालतू आदमी !

लाइसैन्डर : जा जा कुत्ते ओ बिलाव तू ! नीच !
हट जा पीछे, वर्ना पूंछ पकड़ झटकूँगा तुझे
साँप सा।

हर्मिया : कैसा परिवर्त्तन है ? तुम हो गये अचानक
कैसे यों असभ्य ? हे प्रियतम···

लाइसैन्डर : तेरा प्रियतम ! ओ बौनी तातारिन ! जा जा !
घृणित, मूढ तू ? कड़वी दवा कसैली ! चल हट !

हर्मिया : क्या तुम यह दिल्लगी कर रहे ?

हेलेना : हाँ यह सच है और कर रही हो तुम भी तो !

लाइसैन्डर : डेमेट्रियस ! वचन निभाऊँगा में अपना तुझसे सुन ले !
डेमेट्रियस : तुम्हें किसी के बंधन ने बाँधा है कोमल !
नहीं तुम्हारे शब्दों का विश्वास करूँगा !
लाइसैन्डर : किसकी कहते हो बंधन कह ! यही हर्मिया !
क्या मैं इसको मारूँ और हटा दूं पथ से ?
करता इससे घृणा किंतु मैं, फिर भी नहीं मार पाऊँगा।
हर्मिया : आह ! और क्या मरण भला है मेरा बोलो
और बड़ा है कहो घृणा से क्या जो काटे ?
घृणा ! अरे मुझसे ! फिर भी क्यों ?
क्या तुम नहीं वही लाइसैन्डर ?
क्या हूँ नहीं हर्मिया भी में वही बताओ !
वैसी ही सुंदर हूँ अब भी जैसी थी में क्षण भर पहले।
अरे रात में ही तो तुमने प्रेम किया है,
और रात में ही तुमने छोड़ा है मुझको ?
क्यों ? क्यों छोड़ा मुझे ! अहे देवता गगन के देखो
देखो !
क्या है इस सबका रहस्य ? मुझसे कह तो दो !
लाइसैन्डर : जीवन की सौगंध ! और मैं नहीं देखना
तुझे चाहता अब क्षण भर भी।
आशा की रेखा के बाहर हो जा अब तू !
संदेहों, शंकाओं, प्रश्नों आदिक की परिधियाँ सकल तू
उल्लंघित कर, निश्चय कर ले, और अधिक
कोई न सत्य है, नहीं कठिन उपहास समझना अपने
मन में
कि मैं घृणा करता हूँ तुझसे,

और प्यार करता हूँ मैं प्यारी हेलेन को !

हर्मिया : ओ छलिया ! ओ जादूगरनी ! कुसुम कीट तू !
और प्रेम की चोर ! कहाँ से आई निशि में
मेरे प्रिय का हृदय ले गई मुझसे ही तू
ओ मायाविनि ! छीन हाय कैसे बतला तो !

हेलेना : वाह ! खूब यह रही ! नहीं क्या तुझमें बाकी
नारी की लज्जा, कुमारिका का संकोच हर्मिया !
कह तो ?
क्या उठ गयी सहज तेरी व्रीडा भी सहसा !
क्या तू मेरी मधुर विनम्र जीभ से भी सच
चाह रही है उत्तर कड़वे और चुभीले !
ओ धिक्कार ! तुझे धिक् धिक् है,
अरी नकलचिन ! ओ कठपुतली !

हर्मिया : कठपुतली मैं ! क्यों ? अच्छा तो यों है तेरा
खेल, देखती हूँ क्या तेरी चाल भला है !
हम दोनों की ऊँचाई की तुलना करके
तूने अपनी लम्बाई को दिखलाया है ।
अपने लंबे तन का तूने यह प्रभाव इन पर डाला है ?
पर इस ऊँचाई के कारण क्या तू इसके
मन में इतनी ऊँची होकर बैठ गई है ?
क्या मैं बौनी हूँ इतनी, इतनी नीची हूँ ?
क्यों हूँ नीची मैं, कह ओ तू
कुसुम-सुसज्जित लंबे डंडे !
मैं नीची हूँ ? इतनी नीची कभी मैं नहीं सुन ले लंबू !
मेरे नख जो तेरे नयनों तक न पहुँच पायें सुनती है ?

हेलेना : हे सज्जनगण ! यदपि आप उपहास कर रहे हैं
मेरा, पर
ऐसा होने न दें, एक विनती है मेरी !
यह आघात नहीं कर पाये मेरे ऊपर !
मैं ऐसी अभिशप्त नहीं थी, मार पीट में
ऐसी कुशल नहीं हूँ मैं सच ।
मैं स्त्री हूँ भीरु सहज ही, इसको रोकें,
मार नहीं पाये यह मुझको ! आप समझते
होंगे इसको नीचा मुझसे, पर न समझिये
कि मैं कर सकूंगो इसकी कोई बराबरी ।

हर्मिया : नीचा ! फिर कहती है ! सुन लो !

हेलेना : भली हर्मिया ! इतनी कटु मत हो तू मुझसे !
मैं तो तुझे प्यार करती थी सदा हर्मिया !
तुझसे लेती थी सलाह, नुकसान कभी तेरा न किया है,
डेमेट्रियस का प्रेम—एक यह विषय छोड़ दें ।
सो भी इसको प्रिय समझा था, प्रेम प्राप्त करने को
इसका
बता दिया मैंने इसको कि पलायन होगा
आज तुम्हारा सघन विपिन में ।
इसने पीछा किया और हाँ ! प्रेम हेतु ही
मैंने इसका;
इसने मुझको डाँटा है, धमकाया भी है
मुझे पीट देगा, उफ़ कितना तिरस्कार है
इसने मेरा किया, मृत्यु का भय दिखलाया,
जाने दो मुझको छोड़ो अब बहुत हो गया,

मैं एथेन्स चली जाऊँगी ढोती अपनी महामूर्खता,
अब न करूँगी कोई पीछा, जाने दो मुझको हे सखि
तुम !
देखो मैं कितनी भोली हूँ, कितना प्यार भरा है
मुझमें !!

हर्मिया : चल चल जा जा ! तुझे रोकता कौन यहाँ पर ?

हेलेना : मूर्ख हृदय, जो मैं पीछे छोड़े जाती हूँ ।

हर्मिया : अरे साथ क्या लाइसैन्डर के ?

हेलेना : डेमेट्रियस के !

लाइसैन्डर : हेलेना ! मत डर, कुछ कर सकती है तेरा
किंतु नहीं यह ।

डेमेट्रियस : अरे भले ही लो तुम भी हर्मिया पक्ष ही,
पर मेरे रहते वह कुछ भी कर न सकेगी !

हेलेना : अरे नहीं । जब यह होती है क्रुद्ध, बहुत
चालाक कुटिल हो जाती है यह ।
बड़ी कर्कशा थी यह आई थी पढ़ने को संग हमारे
शाला में मैं सच कहती हूँ ।
है तो छोटी ! नीचा मत कहना, है यह वैसे
बड़ी भयानक !

हर्मिया : छोटी ! नीचा ! और कुछ नहीं । छोटी ! नीची !
कब तक तुम करवाओगे अपमान और यह
क्रूर ठिठोली मेरी बोलो !
हट जाओ तुम ! ज़रा देख ही लूँ इसको मैं !

लाइसैन्डर : चल हट बौनी ! भाग तिनकनी !
बँटी घास से गाँठ गठीली !

बीज जरा सी जड़ की उलझन,
मनका सी है चली अकड़ती।

डेमेट्रियस : माने ना माने मेहमान बनूँगा मैं तो !
क्या जोरों से बोल रहे हो और तरफदारी
भी किसकी ?
जो कि घृणा करती है तुमको !
जाओ ! जाओ ! इसे अकेली ही रहने दो !
हेलेना की बात न करना, पक्ष न लेना कह देता हूँ।
अगर ज़रा भी प्यार दिखाया उसको तुमने,
तो लो समझ कि तुमको उसका मोल चुकाना
होगा, समझे ?

लाइसैन्डर : अब वह नहीं रोकती मुझको,
आ जा अब तू हिम्मत हो, तो
देखें किसका है अधिकार आज हम देखें,
तेरा है या, है यह मेरा,
हेलेना है देखें किसकी !

डेमेट्रियस : तो फिर आ जा ! चल देखेंगे !
संग चलूंगा तेरे, देखूं तेरा साहस !

[**लाइसैन्डर और डेमेट्रियस का प्रस्थान**]

हर्मिया : देखा अरी छबीली तूने, तेरे कारण
यह संकट है। नहीं, न जा अब उनके पीछे।

हेलेना मैं तुम पर विश्वास नहीं कर सकती कोई।
तेरे इस मनहूस संग में नहीं रहूँगी।
झगड़े को तो तेरे हाथ उबलते रहते,
मैं तेरी बराबरी क्यों कर कर सकती हूँ ?

पर लंबे हैं पाँव अरी मेरे तो
मुझे भागने से तू रोक नहीं पायेगी।

[प्रस्थान]

हर्मिया : उफ़ ! क्या आश्चर्य्य ! करूँ क्या !
किंकर्त्तव्य विमूढ़ हो गई मैं तो यों ही।

[प्रस्थान]

ओबेरोन : यह तेरी लापरवाही है। या ग़लती है,
या तू जान बूझ कर करता
है ऐसी शैतानी ! क्यों पक !

पक : ओ छायाओं के राजा ! विश्वास करें, सच,
क्या न आपने कहा कि मैं एथेन्स नगर के
वस्त्रों को निहार कर ही पहँचानूं नर को ?
मेरा क्या अपराध भला इसमें है देखें ?
मैंने तो एथेन्स निवासी के नयनों में मधु आँजा है,
इनका झगड़ा वैसे ही तो, मुझे एक आनंद हो गया !

ओबेरोन : देख रहा है ? गये हुए हैं प्रेमी दोनों
द्वन्द्वयुद्ध के लिये ढूँढने जगह इस समय।
रोबिन ! कर शीघ्रता रात को गहरा कर दे !
सघन कुहर से यह तारिल चँदवा तू ढँक दे,
जिसमें से कुछ दीख न पाये, अचेरोन सा,
यों भटकाता चल तू इन दोनों को आगे,
ऐसे जो ये निकट न आयें एक दूसरे के अब पथ में।
कभी बोल तू लाइसैन्डर सा, और कभी तू
डेमेट्रियस सदृश कटुवचन सुना फिर सहसा,
यों दोनों को खूब-खूब भड़का तो लेकिन

पास न आने दे दोनों को !
और अंत में अरे नशीली निंदिया आ घेरे दोनों को
बनी मौत सी सर्वग्राहिणी,
सीसे जैसे भारी बनके पग हो जायें चलते चलते,
गादुर जैसे पंख नींद फैला कर ढाँके इनको धीरे।
तब यह रस लाइसैन्डर के नयनों में पक ! तू
अरे डाल देना, इसमें गुण यह मनहर है
सारी भूलों को सुधारता है यह क्षण में,
और सुला देता है गहरी सी निद्रा में,
जब जगता है व्यक्ति, उसे यह सकल ठिठोली
एक स्वप्न सी, व्यर्थ और फलहीन कल्पना सी
लगती है।
फिर एथेन्स जायेंगे प्रेमी, इनका सुंदर
मिलन मृत्यु तक फिर न वियोग कभी झेलेगा।
तू जब तक यह सब करता है,
मैं जाता हूँ अपनी रानी के समीप औ'
माँगू उससे यही इंडियन बालक जा कर,
फिर उसकी आँखों से जादू दूर करूँगा,
फिर वह दैत्य न उसको प्रिय सा लग पायेगा,
होगी चारों ओर शांति फिर।

पक : परियों के राजा, यह सब जल्दी होना है,
क्योंकि अजदहे-त्वरगति निशि के
मेघों को अब काट रहे हैं जल्दी-जल्दी,
ऊषा का हरकारा देखो उझक रहा है,
जिसके आते ही पिशाच जो रातों में हैं घूमा करते

कब्रिस्तानों में जाते हैं लौट ! और वे
आत्माएँ अभिशप्त चतुष्पथ या बाढ़ों की
बेला में जो गड़ी अनगड़ी रही, चली भी
गईं मौन अपनी शैय्याओं पर सोने को
जिन पर रेंगा करते कीड़े,
क्योंकि लाज आती है उनको
कहीं न दिन आ देखे उनके वास स्थान को,
वे तो स्वतः ज्योति से निर्वासित रहते हैं,
उन्हें स्याह भौंहों वाली यह रात भयानक
ही भाती है सदा अँधेरी !

ओबेरोन : हम तो किंतु आत्माएँ हैं कुछ और किस्म की।
मैंने तो ऊषा से कितनी बार न जाने क्रीड़ा की है !
मैं वन प्रांतर वासी जैसा, कुञ्जों में चलता रहता हूँ
जब कि पूर्व का सिंहद्वार है रक्तिम होता लाल दीप्त सा,
नेप्च्यून पर वरदायिनि किरणें खुलती हैं,
वे उसके हरिताभ सुनिर्झर ताल स्वर्ण से बन जाते हैं,
फिर भी ज़ल्दी ही अच्छी है, देर करो मत,
दिन के आने के पहले ही पूर्ण करो यह
सकल कार्य तुम !

[प्रस्थान]

पक : ऊपर नीचे, ऊपर नीचे,
उन्हें चलाऊँ आगे पीछे !
गाँव खेत में मैं हौआ हूँ,
भटका दूं अब उनको पीछे !
यह आया लो एक !

[लाइसैन्डर का पुनः प्रवेश]

लाइसैन्डर : कहाँ ? कहाँ है ओ गर्वीले !
डेमेट्रियस ! बोल, चुप क्यों है ?

पक : अरे नीच ! आ जा। मैं कब से राह देखता
खड्ग खींच कर, किधर छिपा है ?

लाइसैन्डर : यह ले आया, सीधा तुझ पर.....

पक : आ जा ज़ल्दी ! इधर चला आ·····यहाँ भूमि है
समतल आ जा·····

[लाइसैन्डर का आवाज़ का पीछा करते हुए प्रस्थान
डेमेट्रियस का पुनः प्रवेश]

डेमेट्रियस : लाइसैन्डर ! क्यों नहीं बोलता ! ओ कायर तू
भाग गया है ? अरे भगोड़े ! बोल छिपा है
किस झाड़ी में ? कहाँ छिपाये है अपना सिर ?

पक : ओ कायर, बढ़-बढ़ कर तारों को न छेड़ तू,
ओ बकबकिये !
कहाँ झाड़ियों से कहता है आओ लड़ने !
अरे इधर आ इधर ? निकल मैदान देख तू !
आ जा बच्चे ! अरे दुधमुँहे ! नन्हे मुन्ने !
संटी मार ठीक कर दूंगा ! उसको है धिक्कार उठाये
जो तलवार अरे तेरे हित !

डेमेट्रियस : अच्छा तू है वहाँ ?

पक : आ जा मेरे स्वर को सुनता ! यहाँ नहीं, पर्दों
का तो फिर
खेल खुले में होगा आ जा।

[प्रस्थान]

[लाइसैन्डर का पुनः प्रवेश]

लाइसैन्डर : अरे जा रहा आगे-आगे, और मुझे ललकार रहा है,
जब पुकार सुन कर आता हूँ गायब होता,
अधम, बहुत चलना है जल्दी यह मुझसे तो !
कितनी जल्दी चला किंतु यह कहीं अधिक ही
जल्दी भागा।
भटक गया हूँ ऊबड़ खाबड़ अँधियारे में कर लूँ
मैं विश्राम यहाँ पर।

[लेटता है।]

अरे दिवस ! आलोकित आ जा !
एक बार यदि तू दिखला देगा अपना मुख,
डेमेट्रियस नीच को क्षण भर में ढूँढूंगा
और निकालूँगा मैं उससे अपना बदला।

[सोता है। पक और डेमेट्रियस का पुनः प्रवेश]

पक : हो हो हो ! कायर ! क्यों आता नहीं बता तू !

डेमेट्रियस : हिम्मत हो तो आ जा। लेकिन
भागा जाता है तू तब से ! आगे आगे ! जगह बदलता,
क्यों न ठहरता, आ आँखों से आँख मिला कर देख
जरा तू !
अरे कहाँ है ?

पक : अरे यहाँ हूँ ! इधर नहीं आता है क्यों तू ?

डेमेट्रियस : नहीं, खेल करता है मुझसे ?
दिन में जब मुँह पर मुँह तुझसे देख मिलूंगा
मुलाकात वह मँहगी बहुत तुझे पड़ेगी।

अरे चला जा अपने रस्ते !
बहुत थका हूँ, कितनी शीतल है यह शैय्या !
क्यों न यहाँ लेटूं कुछ क्षण को !
सुबह ढूंढ़ लूंगा फिर उसको।

[लेटता है, सो जाता है। हेलेना का प्रवेश]

हेलेना : अरी रात विश्रांत ! अरी ओ दुखद व्यथा की
जननी, ओ अछोर निशि काली !
अरी घटा दे अपने तन को !
प्राची से वर्षण कर सुख का,
जाऊँ मैं एथेन्स दिवस में,
ऐसा संग छोड़ जाऊँ मैं जिसमें सब ही
हाय घृणा करते हैं मुझसे !
ओ री निद्रा ! तू जो अवसादों की पलकें
कभी कभी मूंदा करती है,
मुझे दूर ले चल इस मेरे विकल विश्व से !

[लेटती है, सो जाती है।]

पक : अभी तीन हैं ! आ एक और !
एक से दो दो, हों तब चार !
आ गई लो वह, शप्त उदास !
काम भी है बालक अविचार,
बिचारी नारी का जो हृदय
विकल करता है पागल, सदय
बड़ा चंचल है मन्मथ मीत,
खेल का खेल, प्रीत की प्रीत ?

[हर्मिया का पुनः प्रवेश]

हर्मिया : कभी न इतनी श्रांत हुई मैं,
कभी न इतनी व्यथा उमड़ घिर आई ऐसी,
ओस हाय अंगों में कैसी शिथिल उदासी भरती मेरे,
और झाड़ियों के काँटों में पाँव छिप गये,
कैसे चलूँ···हाय मैं कैसे सरकूँ···रेंगूं···
मन की होड़ नहीं कर पायेंगे पग मेरे···
आह यहीं मैं रुक जाऊँ दिन के आने तक···
हे भगवान ! अगर कोई हो युद्ध-द्वन्द्व तो
लाइसैन्डर की रक्षा करना·····

[लेटती है, सो जाती है।]

पक : धरती पर हैं
सोये गहरी नींद,
तेरे नयनों को दूं आँज
मनहर प्रेमी ! ले मैं सींच

[लाइसैन्डर की आँखों पर रस निचोड़ता है।]

जागेगा जब
खोल नयन
होगा तब सच्चा सुख प्राप्त
रूप चयन !
उसी प्रिया के नयनों में !
गाँव गाँव में है यह बोल,—
जगते में, जो जाये दिखाई
वही चुने 'अपनी' कह, भाई !

जैक को जिल !
नहीं टिल मिल,
अपनी घोड़ी अपने पास,
फिर सब होगा ठीक !
सोये गहरी नीद !

[प्रस्थान]

चौथा अंक

दृश्य १

[वही स्थान]

[लाइसैन्डर, डेमेट्रियस, हेलेना और हर्मिया सो रहे हैं।]

[टिटानिया और बौटम का प्रवेश। पीज़ब्लौसम, कौबवैब, मौथ, मस्टर्डसीड और अन्य परि सेवक-सेविकाएँ साथ हैं। पीछे ओबेरोन है, अदृश्य।]

टिटानिया : आओ बैठो प्रिय इस फूलों की शैय्या पर,
मैं कपोल यह स्निग्ध तुम्हारे तनिक दुलारूँ,
इस चमकीले मधुर शीश पर प्राण तुम्हारे
लाओ यह गंधित गुलाब मैं इधर लगा दूं,
और तुम्हारे सुंदर लंबे इन कानों पर मुद्रित कर दूं
अपना चुंबन,
ओ मेरे जीवन के चिर आनंद सुभग हे !

बौटम : पीज़ब्लौसम कहाँ है ?

पीज़ब्लौसम : यह हूँ तो मैं।

बौटम : पीज़ब्लौसम, ज़रा मेरे सिर को खुजा दो। श्रीमान् कौबवैब कहाँ हैं ?

कौबवैब : आज्ञा को प्रस्तुत हूँ कहिये।

बौटम : श्रीमान् कौबवैब ! अच्छे महोदय ! आप अपने शस्त्र हाथों में उठा लें और मेरे लिये लाल कमर की एक भाली मधुमक्खी को गोखरू के ऊपर मार डालें ! और श्रीमान् ! मेरे लिये शहद का

छत्ता ला दें। इस झंझट में बहुत मेहनत न करिये श्रीमान् ! पर श्रीमान् ! इतना ध्यान रखियेगा कि कहीं छत्ता न टूट जाये। मैं यह पंसद नहीं करूँगा कि आप शहद के छत्ते के नीचे नहाकर चुचाते हुए लौट कर आयें। महाशय मस्टर्डसीड कहाँ हैं ?

मस्टर्डसीड : यहाँ देखिये, आज्ञा देवें।

बौटम : महाशय मस्टर्डसीड ! मुझे अपना हाथ दें। अरे तकल्लुफ़ छोड़िये आप भी !

मस्टर्डसीड : कहिये क्या इच्छा है श्रीमान् !

बौटम : कुछ नहीं श्रीमान्, मेरे अच्छे महाशय, बस ज़रा घुड़सवार कौबवैब को खुजाने में मदद देनी है। मुझे नाई के यहाँ जाना चाहिये श्रीमान् ! मुझे लगता है मेरे चेहरे में बहुत ज्यादा बाल उग आये हैं, और मैं ऐसा नाजुक गधा हूँ कि जब मेरे बालों में गुलगुली मचती है तो खुजाने की जरूरत पड़ती ही है।

टिटानिया : आह प्राण ! क्या गीत सुनोगे तुम इस बेला ?

बौटम : गाना सुनने का मैं बड़ा शौकीन हूँ। सँडासी और हड्डियाँ जुटा लो !

टिटानिया : प्रियतम, बोलो ! क्या कुछ खाने की इच्छा है ?

बौटम : सचमुच ! चारे का गट्ठर ! अरे मैं सारी तुम्हारी सूखी जई यों ही चबा जाऊँगा। वैसे मुझे सूखी घास मिल जाये तो अच्छा रहे। अच्छी घास। मीठी घास। है कहीं ? किसी के पास !

टिटानिया : मेरी सेवा में है परी एक ऐसी जो
साहसपूर्ण हृदय रखती है, उसे भेज कर अभी
गिलहरी के संग्रह से मँगवाती हूँ
प्राण तुम्हारे हेतु नये अखरोट मधुरतम !

बौटम : मुझे तो मुट्ठी दो मुट्ठी सूखे मटर मिल जायें। पर मैं प्रार्थना

करता हूँ, कोई मुझे हिलाना नहीं, मुझे नींद-सी आ रही है।

टिटानिया : सो लो प्रियतम ! मैं अपने भुजबंधन में
तुमको बाँधूंगी। जाओ परियो ! फैल जाओ
हर ओर, यहाँ एकान्त करो तुम।

[**परियों का प्रस्थान**]

ऐसे ही सुरभित वुडबाइन कलि अलबेली
गंध कुसुम प्रिय हनीसकिल का आलिंगन करता है
प्रियतम !
और सिरपेंचे की लता ऐम तरु की उँगलियाँ
पकड़ झूमती।
आह प्रेम करती हूँ तुमसे कितना प्रिय मैं,
मोहित हूँ मैं तुम पर कितनी !

[**वे सोते हैं।**]

[**पक का प्रवेश**]

ओबेरोन : (**बढ़ कर**) स्वागत प्रिय रोबिन ! क्या देख रहे हो
मधुर दृश्य यह ?
इसके उत्कट तीव्र प्रेम को देख मुझे करुणा आती है।
इस वनांत में इसी घृणित से महा मूर्ख से मिलनातुर थी
तभी इसे डाँटा था मैंने, दूर कर दिया,
देखो इसने इसकी रोमिल कनपटियों को
कैसे नये सुगंधित फूलों से दुलार कर यहाँ सजाया !
वह नीहार, जो कि कलियों पर पीन सघन हो
प्राची का सा रत्न बना जगमग सा करता
इस छोटे से विकल फूल के नयन बीच में अश्रु बन गया,
क्योंकि रो रहा है अपना अपमान सोच वह !

जब मैंने स्वेच्छा में इसको छेड़ दिया था,
इसने नम्र वचन कह मुझसे कहा—'शांत हो।'
तब मैंने वह बालक माँगा,
तुरत दे दिया इसने मुझको, और शीघ्र ही
परी भेज दी अपनी उसको परीदेश से ले आने को।
अब बालक पाया है मैंने,
अब यह इसका दृष्टिदोष अति घृणित दूर
कर दूं मैं इससे।
प्रिय पक ! इस एथेन्स के वासी के सिर से यह
नकली चेहरा करो दूर तुम
जब जागेगी परी देश की रानी तब फिर यह जब जागे
लौटे यह एथेन्स, भूल जाये सब
इस रजनी की घटना जैसे कोई भयद स्वप्न था।
पर पहले मैं परियों की रानी को मुक्त करूँ बंधन से।
हो जा, जैसी पहले थी तू।
देख वही जो दृष्टि योग्य हो !
शशि-कलिका का मदन-पुष्प पर
ऐसा है अधिकार, भोग्य ओ !
मेरी टिटानिया अब जागो, मेरी रानी,
मेरी प्रेयसि !

टिटानिया : मेरे ओबेरोन ! स्वप्न देखे मैंने क्या !
मुझे लग रहा जैसे किसी गधे पर मोहित हुई हाय मैं !

ओबेरोन : वह देखो प्रिय पात्र तुम्हारा ! सोता तो है।

टिटानिया : यह सब कैसे हुआ ! घृणा होती है मुझको
इसका यह आनन निहार कर।

ओबेरोन : रहो शान्त क्षण ! रोबिन ! इसका शीश बदल दो !
टिटानिया ! संगीत छेड़ने की आज्ञा दो !
पंचेन्द्रिय की तन्मय निद्रा से भी गहरी
मरण सदृश विस्मृति जिससे निस्सृत हो स्वप्निल !

टिटानिया : छेड़ो छेड़ो ! गीत अरे ऐसा छेड़ो जो
इन्द्रजाल सा निद्रा में आकर दुलरा दे !

[संगीत, स्तब्धता]

पक : अब जब तुम जागो तो अपनी मूर्ख दृष्टि से ही
सब देखो !

ओबेरोन : गाओ गाओ ! आओ मेरी रानी आओ
मेरा हाथ पकड़ कर त्यागो इस धरती को
जहाँ विनिद्रित हैं यह प्राणी ।
हम तुम फिर मिल गये आज है,
कल हम आधी रात प्रिये ! जब गहरायेगी
ड्यूक थीसियस के रमणीय भवन में सुख से
मंगलमय जयमय नाचेंगे ।
रे भविष्य में आने वाली प्रिय संततियों
को आशीष मनोहर देंगे,
संग थीसियस के यह सच्चे प्रेमी दोनों
युगल हर्ष में पुलकित होंगे ।

पक : परिस्तान के राजा ! देखो, चला तिमिर अब
मोर-विहग का सुन पड़ता है मीठा कलरव ।

ओबेरोन : मेरी रानी ! स्तब्ध उदासी दूर छोड़ दें
अब हम निशा तिमिर सा उसको त्यागें आओ
हम भूमण्डल की परिक्रमा कर सकते हैं

यायावर शशि से भी त्वर गति से, अब आओ

टिटानिया : आओ स्वामी चलें उड़ चलें,
कैसे हुआ रात में यह सब ?
इन मर्त्यों के साथ भूमि पर सोती कैसे
पाई गई कहो मैं ऐसे ! क्या रहस्य नव !

[प्रस्थान]

[नेपथ्य में शृंगी नाद । थीसियस, हिप्पोलिटा, एजियस तथा सेवकों का प्रवेश]

थीसियस : जाओ कोई और बुला लाओ वनचर को ।
कार्य्य पूर्ण हो गया हमारा ।
लो दिन का आलोक लगा है छन-छन आने,
मेरी प्रिया शिकारी कुत्तों का संगीत; सुनेगी भीषण,
पश्चिम की घाटी में गुंजित; उन्हें छोड़ दो,
दौड़ा दो, कहता हूँ जल्दी, वनचर ढूंढो !

[एक सेवक का प्रस्थान]

सुंदरि रानी ! हम गिरि शिखर वहाँ है, उस तक चले चलेंगे
और वहाँ से संगीतात्मक प्रतिध्वनियों को श्रवण करेंगे,
कुत्तों का कठोर स्वर गूंजेगा वह कैसा !

हिप्पोलिटा : एक बार मैं सँग गई थी
हरक्युलीज़, औ' कैडमैस के प्रिय !
जब स्पार्टा के भयद शिकारी कुत्तों से था
घेरा उनने भालू एक क्रीट के वन में ।
वैसा हाँका नहीं सुना है मैंने अब तक ।
कुञ्जों में, नभ में, निर्झर में, ठौर-ठौर में
लगता था ज्यों एक, एक थी रोर उठ रही,

लगता था प्रत्येक बोलता था चिल्लाता
उत्तर प्रत्युत्तर सा देता, ऐसा मधुर सुगर्जन,
ऐसा गीतात्मक लय मादक कोलाहल वह
फिर न सुन सकी।

थीसियस : अरे शिकारी कुत्ते मेरे भी तो रानी
हैं स्पार्टा की उसी नस्ल के,
ऐसे हैं ये, लम्बे इनके कान लटकते ऐसे नीचे
झाड़ा करते हैं प्रभात की नयी ओस को।
मुड़े हुए घुटने हैं इनके, और गले में मांस लटकता
थेसाली वृषभों सा इनके,
दौड़ा करते धीरे पीछे, किंतु एक दूजे के पीछे लगे-
लगे ये
ऐसे चलते जैसे बजते हैं वे घंटे !
ऐसी चिल्लाहट लयमय न सुनाई देगी,
शृंगी का निनाद भी उसको पकड़ न सकता।
थेसाली, स्पार्टा कि क्रीट, हाँ नहीं कहीं भी !
सुनकर स्वयं जाँच लेना तुम !
ठहरो ! धीरे ! यहाँ कौन यह दैवी वन प्राणी सोते हैं !

एजियस : महाराज ! यह तो मेरी बेटी सोती है,
यह है लाइसैन्डर, डेमेट्रियस यह है, यह है हेलेना जो
वयोवृद्ध नेडर की दुहिता,
ताज्जुब है यह चारों साथ यहाँ कैसे हैं !

थीसियस : निस्संदेह जगे हैं यह सब भिनसारे ही
आज ग्रीष्म ऋतु का त्यौहार मनाने मिल कर,
और हमारा आयोजन सुन, ससम्मान आये हैं

अपना आदर करने।
किंतु एजियस ! क्या न आज ही अरे हर्मिया को
अपना उत्तर देना है ?
अपना निर्णय उसे आज ही तो कहना है ?

एजियस : हाँ श्रीमान् ! आज ही है वह दिवस सुनिश्चय।

थीसियस : शिकारियों को आज्ञा दो वे शृंग बजा कर
इन्हें जगा दें।

[नेपथ्य में शृंगी नाद और पुकारना। लाइसंन्डर, डेमेट्रियस, हेलेना और हर्मिया जागते हैं और उठ जाते हैं।]

नमस्कार ! अब संत दिवस का उत्सव बीता,
वन के पक्षी युगल लगे हैं होने क्या अब ?

लाइसैन्डर : क्षमा करें श्रीमंत·····

थीसियस : चलो हटो अब ! अरे खड़े हो,
मुझे ज्ञात है तुम दोनों प्रतिद्वन्द्वी प्रेमी,
फिर जग में यह मधुर मिलन कैसे आया है ?
अरे घृणा क्या ईर्ष्या से इतनी सुदूर है
जो सोती यों घृणा परस्पर मिल कर ऐसे
और शत्रुता का कोई भय शेष नहीं है।

लाइसैन्डर : हे श्रीमंत् ! कहूँ क्या मैं हूँ स्वयं चमत्कृत,
अर्द्धसुप्त हूँ या है अर्द्ध जाग्रतावस्था मेरी सच यह ?
किंतु शपथ है, मैं कह सकता नहीं कि कैसे
आ पहुँचा मैं यहाँ न जाने !
अरे सत्य ही कहता हूँ मैं जितना पाता
सोच विगत की,
शायद यह सब यों है हुआ कि मैं था

आया यहाँ हर्मिया के संग ।
और हमारा यह विचार था करें पलायन
हम एथेन्स से
दूर, दूर इतने कि यहाँ के नियम नहीं
लागू हों हम पर ।
हम इन बाधाओं से बच कर भाग जा सकें !

एजियस : बहुत हुआ प्रभु ! बहुत हुआ अब,
न्याय, नियम इस पर प्रभु ! अपना अब बरसायें,
दण्ड चाहिये दण्ड क्योंकि अपराध हुआ है !
कर जाते ये दूर पलायन, औ' डेमेट्रियस !
इस प्रकार मुझको तुमको यह खूब हराते,
तुम्हें न मिलती पत्नि और मुझको मेरी अभिलाषा
निश्चय,
मैं चाहता यही कि वह हो पत्नि तुम्हारी !

डेमेट्रियस : हे श्रीमंत ! सुंदरी हेलेना ने मुझको
बतलायी थीं इनके इस विचार की बातें ।
इनके वन में आने की सुन हुआ क्रुद्ध मैं
पीछे भागा इनके, और सुंदरी हेलेन आई पीछे ।
पर श्रीमान् ! जानता कुछ भी नहीं किंतु मैं
क्या थी ऐसी शक्ति, शक्ति वह क्या थी ऐसी—
जिससे प्रेम हर्मिया के प्रति जो था मेरा
गया बर्फ़ सा पिघल और लगता है अब तो
बचपन का सा खेल एक कभी जो बहलाता था ।
मेरे मन के सारे सद्गुण, श्रद्धा सारी,
मेरे दृग का हर्ष और मंज़िल भी अंतिम

बनी यही हेलेना ! हे प्रभु ! इससे ही तो
देखी थी हर्मिया नहीं, तब निश्चितार्थ था
हुआ, किंतु ज्यों
ज्वर में भोजन भी अप्रिय लगने लगता है,
किंतु स्वस्थ होने पर स्वाभाविकता से जो
फिर अच्छा लगने लगता है,
मुझे प्यार हेलेन का, केवल वही चाहिये
और उसी के प्रति मेरा यह प्यार अमर हो !

थीसियस : सुघर प्रेमियो ! मिले भाग्य से ही तुम
सुख से,
अब छोड़ो यह विषय न इस पर और बात हो !
और एजियस ! अभिलाषा वह
सकल तुम्हारी पूर्ण करूँगा मैं, मंदिर में
इन दोनों युगलों को भी अनंतबंधन में
बाँधूंगा, जब स्वयं स्नेहबंधन में मैं भी
बँध जाऊँगा ।
अरे प्रात तो बीत चला, अपना शिकार भी
नहीं जमेगा, टालो उसको,
चलो चलें एथेन्स ! तीन हम और तीन ये
दावत होगी बड़े ठाठ की, सुख बरसेगा ।
हिप्पोलिटा ! चलो हे प्रेयसि !

[**थीसियस, हिप्पोलिटा और सेवकों का प्रस्थान**]

डेमेट्रियस : यह सब बातें दिखती हैं लघु, धुंधली-धुंधली
जैसे वे सुदूर के पर्वत मेघ बन गये !

हर्मिया : विस्फारित नयनों से मैं क्या देख रही हूँ

सब कुछ दो दो सा दिखता है।

हेलेना : यही मुझे भी तो लगता है।
डेमेट्रियस रत्न सा मुझको प्राप्त हुआ है,
मेरा है वह, मेरा ही है।

डेमेट्रियस : क्या सचमुच हम जाग रहे हैं ?
लगता है हम अभी सुप्त हैं, स्वप्न देखते।
क्या न ड्यूक आये थे सचमुच अभी यहाँ पर,
क्या न उन्होंने हमें बुलाया अपने पीछे !

हर्मिया : और पिता भी तो थे मेरे !

हेलेना : और संग थी हिप्पोलिटा ! साथ थी उनके !

लाइसैन्डर : वे सब मंदिर में हैं हमको बुला गये न ?

डेमेट्रियस : तब तो हम सब जाग रहे हैं। चलो चलें अब।
अपने सुपने हम दुहरायें।

[प्रस्थान]

बौटम : (जाग कर) जब मेरे बोलने का मौका आयेगा, मुझे पुकारना। मैं उत्तर दूंगा। मुझे आगे बोलना है—'अति सुन्दर पाइरेमस !' अरे हाय ! हइओ हो ! पीटर क्विन्स ! फ्लूट, धौंकनी बनाने वाले ! स्नाउट, ठठेरे ! स्टारवेलिंग ! हे भगवान ! सब छिप गये ? और मुझे सोता छोड़ गये ! मुझे भी क्या अजीब सुपना-सा हुआ ! किसी आदमी की अक्ल में तो ऐसा सुपना क्या आयेगा ? आदमी एक गधा हो तो है, अगर अब वह अपने सुपने को बताता-पूछता फिरे ! मुझे लगता है मैं था एक···इंसान तो कोई क्या बता सकता है—मुझे लगता है, मुझे लगता है मेरे·····पर आदमी बेवकूफ़ ही तो है, वह अगर कहे कि वह बता देगा कि मैं क्या हो गया था ! आदमी की आँखों ने नहीं सुना होगा, न कानों ने

देखा होगा, न हाथों ने चखा होगा, न जीभ ने सोचा होगा, न दिल ने कहा होगा—ऐसा था मेरा सुपना ! कोई क्या बतायेगा ! मैं इस सुपने पर पीटर क्विन्स से एक लंबी गाने लायक कविता लिखवाऊँगा । उसका नाम होगा बौटम का सुपना, क्योंकि उसका कोई तला[1] न होगा, और उसे मैं नाटक के अंतिम भाग में गाऊँगा, ड्यूक के सामने । अरे उसे खूब ज़ोरदार बनाने के लिये उस स्त्री[2] की मौत पर गाऊँगा ।

[प्रस्थान]

दृश्य २

[एथेन्स, क्विन्स का घर]

[क्विन्स, फ्लूट, स्नाउट और स्टारवेलिंग का प्रवेश]

क्विन्स : क्या तुमने बौटम के घर किसी को भेजा ? क्या वह घर लौट आया ?

स्टारवेलिंग : उसकी तो कोई खबर ही नहीं । बेशक उसे तो वे लोग ले गये ।

फ्लूट : अगर वह नहीं आ सकता तो नाटक भी मारा गया । उसके बिना क्या वह आगे चल सकता है ?

क्विन्स : मुमकिन नहीं ! सारे एथेन्स में उस जैसा आदमी नहीं मिलेगा जो पाइरैमस का पार्ट अदा कर सके ।

फ्लूट : नहीं जी ! यह तो है । कोई एथेन्स में तो उस जैसा अक्लमंद दस्तकार नहीं मिलेगा ।

---

१. तला—अंगरेज़ी में शब्द है बौटम । शेक्सपियर ने यहाँ शब्दों का खेल किया है ।

२. स्त्री यानी नाटक की नायिका थिस्बी ।

क्विन्स : लाजवाब आदमी था। आवाज़ की मिठास में तो समझो जैसे कोई नारी हो !

फ्लूट : नारी नहीं, कहिये भारी ! भगवान न करे, नारी वह कहाँ !

[स्नग का प्रवेश]

स्नग : कलाकारो ! ड्यूक मन्दिर से आ रहे हैं और उनके साथ दो या तीन और श्रीमंत हैं जिनका भी अपनी स्त्रियों से विवाह हुआ है। अगर हमारा खेल जम जाता तो किस्मत बन जाती।

फ्लूट : हाय प्यारे झगड़ालू बौटम ! ज़िन्दगी में छः आने[1] रोज़ खो डाले तुमने ! क्या तुम ऐसा कर सकते थे ? अगर ड्यूक उसे इतना न देते, पाइरैमस का पार्ट करने पर तो जनाब में नाक कटा देता, फाँसी पर झूल जाता, पर उसके लिये क्या वह योग्य नहीं था। पाइरैमस को छः आने। कुछ भी नहीं थे।

[बौटम का प्रवेश]

बौटम : कहाँ गये मेरे दोस्त ! कहाँ है मेरे दिलोजिगर !

क्विन्स : बौटम ! सुन ली भगवान ने ! कैसा दिन है। भाग खुल गये !

बौटम : कलाकारो ! मैं आपको अजीब बातें बताऊँगा, पर मुझसे पूछना नहीं कि क्या है ? क्योंकि अगर में वह भी बता दूं तो असल का एथेन्सवासी नहीं हो सकता। जैसे जो जो हुआ, वह मैं आपको सब बता दूंगा।

क्विन्स : प्यारे बौटम ! सुनाओ ! सुनाओ !

बौटम : एक लफ़्ज़ भी मेरे बारे में इस वक्त नहीं ! मैं सिर्फ़ यह बताऊँगा कि सुन लो ! सुन लो ! ड्यूक ने खाना खा लिया है। कपड़े पहन लो, दाढ़ियाँ सूत लो, जूतों में नये फ़ीते डाल लो, और फ़ौरन महल पहुँचो। किस्सा कोताह यह है कि नाटक

---

१. पेन्स।

हमारा होगा, उसकी माँग की गई है। हर हालत में थिस्बी के कपड़े साफ़ धुले होने चाहियें। जो शेर कर पार्ट कर रहा है वह अपने नाख़ून न काटे, क्योंकि वह ही शेर के पंजों की जगह काम दे जायेंगे। प्यारे कलाकारो ! अभिनेताओ! कोई भी प्याज़-लहसुन न खा लेना, क्योंकि हमारे मुख से बदबू नहीं आनी चाहिये वहाँ। मुझे यकीन है कि लोग कहेंगे आख़िर में—कैसा सुंदर सुखांत नाटक है ! एक लफ़्ज़ नहीं ! चलो ! फ़ौरन ! चलो !!

[प्रस्थान]

पाँचवाँ अंक

दृश्य १

[एथेन्स—थीसियस का प्रासाद]

[थीसियस, फाइलोस्ट्रेट, हिप्पोलिटा, लार्डगण और सेवकों का प्रवेश]

हिप्पोलिटा : प्राण थीसियस ! यह प्रेमीगण जो कहते हैं,
वह सब कितना अद्‌भुत है सच !

थीसियस : अरे सत्य से कहीं अधिक आश्चर्य्यजनक है !
इन प्राचीन कथाओं, इन परियों की बातों
में मुझको विश्वास नहीं होता है बिल्कुल।
प्रेमीजन औ' पागल, इनके तो दिमाग़ हैं
उत्तेजित रहते ऐसे ही।
उन्हें अजीब-अजीब शक्ल दिखती रहती हैं !
शांत विवेक न जिसको पाता सोच वही कहते हैं वे तो !
पागल, प्रेमी, कवि—तीनों की
होती है कल्पना तीव्र ही !
नहीं नरक में जितने वे शैतान, दीखते किसी एक को,
वह पागल है।
प्रेमी उच्छृंखल, हेलेन सी रूपसि की छवि
किसी कँजरिया के चेहरे में ही पा लेता !
कवि की आँखें,
विस्फारित हो किसी मधुर उन्मादाप्लावित,
व्योम धरा को हैं निहारती, और अवनि से

फिर अंबर तक,
और कल्पना जैसे अनजाने रूपों को देती है आकार
आप ही
कवि-लेखनी उन्हें कर देती सगुण, शून्य को छवि देती है,
नामधेय रचती है उसको सत्य बनाकर !
सुख की यदि आशंका है तो
वह अवश्य करता है प्रस्तुत ।
किंतु निशा में, कर कल्पना किसी भय की वह
सहज किसी झाड़ी को भालू कह सकता है ।

हिप्पोलिटा : किंतु रात की कथा समस्त कह रहे जो ये
उसमें क्या इन सबके ही मस्तिष्क एक से
हुए, कि सब की हुई कल्पना एक सदृश ही ?
और कथा में तारतम्य भी तो पूरा है,
कुछ भी हो आश्चर्य्यजनक है, स्तुत्य सत्य ही !

थीसियस : लो प्रेमीजन आये, कैसे हैं प्रसन्न वे !

[लाइसैन्डर, डेमेट्रियस, हर्मिया और हेलेना का प्रवेश]

मित्रो ! हो आनंदित तुम सब ! और प्रेम के
नये-नये दिन रंजन करें तुम्हारे मन का ।

लाइसैन्डर : हमसे अधिक आपको सुख हो स्वामी, गौरव
बढ़े आपका !

थीसियस : आओ ! होगा मास्क नृत्य क्या हम देखें अब ?
अरे तीन घंटे का लम्बा समय सामने पड़ा हुआ है,
भोजन करके सोने तक के बीच समय में !
कहाँ हमारे आनंदोत्सव का है बोलो नियत प्रबंधक !
क्या आनन्द यहाँ प्रस्तुत है ?

क्या है नाटक नहीं एक भी जो कि हमारे
इन लम्बे घंटों को सुख से ही सरका दे ?
फाइलोस्ट्रैट कहाँ है उसको यहाँ बुलाओ !

फाइलोस्ट्रैट : प्रस्तुत हूँ, थीसियस शक्तिशाली महान हे !

थीसियस : आज सांध्य बेला के हित क्या रंजन है अब ?
मास्क है कि संगीत ! किस तरह काल बितायें
यदि कोई है नहीं मनोरंजन कैसे हो ?

फाइलोस्ट्रैट : यह संक्षिप्त एक सूची है
जिसमें रंजन के साधन हैं वर्णित हे प्रभु !
जो चाहें श्रीमान् बतायें, वही प्रथम देखेंगे हम सब !

[कागज़ देता है।]

थीसियस : (पढ़ता है।) सैन्टॉरों[1] का युद्ध ! इसे गायेगा अपने
तारों के बाजे पर एक नपुंसक आ कर
है कोई एथेन्स निवासी।
नहीं यह नहीं, मैं कह चुका उसे पहले ही प्रेयसि से हूँ,
अपने स्वजन हरक्युलिस की गौरव गाथा में !
(पढ़ता है।) नशे ! नशे में डूबे बैकेनल[2] का
दंगा जिसमें क्रोधित हो कर
थ्रेस निवासी गायक गण का वध करते हैं वे पागल से,
बहुत पुरानी चीज़ हो गई ! पहली बार विजेता बन कर
मैं थीबीज़ नगर से आया, तब भी यही हुआ था
अभिनय !
(पढ़ता है।) ज्ञान, ज्ञान के स्वर्गवास पर

---

१. ग्रीस में अर्द्ध मनुष्य अर्द्ध पशु माने जाते थे। गाते थे।

२. काम वासना-प्रधान उन्मत्त उपदेवतागण।

कला-देवियों का वह रोदन !
ज्ञान बुभुक्षित हो मरता है !
यह कोई है तीव्र व्यंग, आलोचन होगा,
इस विवाह के उत्सव में तो नहीं जँचेगा।
(पढ़ता है।) पाइरैमस थिस्बी की प्रेम कथा, यह क्या है?
दुखमय है क्या या सुखांत ! सुख भी औ' दुख भी ?
ऊबाने वाली संक्षिप्त भला यह क्या दोनों ही ?
वाह ! वाह ! यह गर्म बर्फ़ है, अद्भुत औ'
आश्चर्य्यजनक कैसा है हिम जो !
अजब सुरीले और बेसुरे का मिलान है ?

फाइलोस्ट्रेट : दस शब्दों का नाटक है प्रभु !
इतना छोटा नाटक मैंने कभी न देखा !
किंतु वही दस शब्द बहुत लंबे लगते हैं,
मुश्किल हो जाता है उसको देख झेलना,
सारे नाटक में न एक भी शब्द कहीं
उपयुक्त मिलेगा, नहीं एक भी
अभिनेता है ठीक, अंत है सुखद क्योंकि
पाइरैमस करता आत्मघात है !
देख चुका हूँ, प्रभु ! इसका, मैं स्वयं रिहर्सल,
और कहूँगा, मेरी आँखें हुई पनीली,
किंतु न बरसा पायेंगी आँखें फिर ऐसे
अश्रु हास के, जैसी उसे देख कर आती हँसी जोर की।

थीसियस : अरे कौन है जो उसका अभिनय करते हैं ?

फाइलोस्ट्रेट : हैं मजूर, एथेन्स नगर के मेहनतकश वे,
दस्तकार हैं,

कभी बुद्धि का श्रम न उठाया लगता उनने ?
अब जो तोड़ लगन से जुटकर यह नाटक तैयार किया है
प्रभु ! विवाह के लिये आपके,
रंजन करने ।

थीसियस : तब हम उसे अवश्य, बुलाकर के, देखेंगे ।

फाइलोस्ट्रेट : नहीं, वीर प्रभु ! वह आपके योग्य तो सचमुच
कभी नहीं है । स्वयं सुन चुका हूँ सारे को !
वह तो कुछ भी नहीं, नहीं है कुछ भी, कह दूँ !
हाँ उनके यदि आप इरादे देखें, उनकी नीयत देखें
उसमें शायद हो तफरीह आपकी थोड़ी !
बड़ी बड़ी मेहनत से रट कर याद किया है नाटक उनने,
केवल करें प्रसन्न आपको, जी बहलायें,
यही हृदय में भाव रहा है ।

थीसियस : मैं अवश्य देखूंगा उनका नाटक, क्योंकि कभी भी
अनुचित होता कुछ न वहाँ पर
जहाँ सादगी औ' श्रद्धा हैं तत्पर रहते ।
जाओ, उनको यहाँ बुलाओ,
आसन ग्रहण तुम करो अपना अहे देवियो !

[फाइलोस्ट्रेट का प्रस्थान]

हिप्पोलिटा : नहीं, चाहती मैं कि दीनता अधिक भार ले,
और तुम्हारी सेवा में कर्तव्य नष्ट हो ।

थीसियस : आह नहीं होगा कुछ ऐसा मेरी प्रेयसि !

हिप्पोलिटा : वह कहते हैं वे तो कुछ भी नहीं जानते ।

थीसियस : हम वह 'कुछ भी नहीं' देख कर
भी उनको देंगे अपना तो धन्यवाद ही,

क्या न दया इतनी हम उन पर कर सकते हैं ?
उनकी भूलों को नगण्य मानेंगे हम तो
यही हमारी क्रीड़ा की सौम्यता बनेगी ।
नहीं जिसे कर सकता है कर्त्तव्य दीन मन,
गौरव का सम्मान शक्ति में उसे परखता
गुण की चिंता त्याग, प्रेयसी !
मैं आया हूँ यहाँ, अनेकों विद्वानों ने
मेरा स्वागत किया योजनाएँ रट-रटकर,
पर जब संमुख आते मेरे काँप गये वे पड़ कर पीले,
अटक-अटक कर बोल सके वे हकलाये से,
भय ने उनकी वाणी की वह सहज तीव्र गति उनसे छीनी,
और अंत में मूक बने वे चले गये, स्वागत भाषण भी
बोल न पाये,
प्रेयसि ! सुनो ! बात का मेरी तुम विश्वास करो,
मैंने तो
उस विमौन में भी अपने स्वागत का अनुभव
किया क्योंकि वह भय था क्या ? कर्त्तव्य परायण
संकोचों का एक प्रदर्शन,
उक्ति-चमत्कारों से गर्भित संभाषण का
रस मैंने पाया उन नम्र अबोलेपन में,
प्रिये ! प्रेम औ' वह सादगी अवाक् मुझे तो
लगता है उँडेलते अपने भावों को मन की
गहराई से, सब कुछ ही
कर देते हैं प्रगट, नहीं रहती कुछ बाधा ।

[फाइलोस्ट्रेट का पुनः प्रवेश]

फाइलोस्ट्रेट : स्वामी हों प्रसन्न ! आता है सूत्रधार अब
और सुनायेगा अपना वक्तव्य प्रथम वह ।

थीसियस : आने दो, उसको आने दो !

[तूर्य्य निनाद]

[प्रथम वक्तव्य के रूप में क्विन्स का प्रवेश]

[प्रथम वक्तव्य]

अप्रसन्न करते हैं यदि हम,
तो वह नेकनीयती से ही,
यही सोचिये, क्योंकि नहीं हम
अप्रसन्न करने आये हैं !
नेकनीयती लाई हमको, और यहाँ पर
अपना सादा कौशल सारा
दिखलाते हैं, और अंत का
अपने यही सत्य-उपक्रम हैं ।
अतः सोचिये, हम विरोध पाते हैं केवल,
हम न यहाँ आये हैं सचमुच
सोच, आपको हम कर सकते
हैं प्रसन्न संतुष्ट हृदय से,
किंतु हमारी नीयत यह है,
सब कुछ से प्रसन्न हों श्रीमन् !
यह अपना तो भाव नहीं है ।
पछताएँ श्रीमान् हृदय में ।
अभिनेता प्रस्तुत हैं सारे ।
और देख कर उनका अभिनय

जान सकेंगे आप स्वयं ही,
जो कुछ भी जानने योग्य है।

थीसियस : यह आदमी एक बात पर भी नहीं जमता।

लाइसैन्डर : उसने तो वक्तव्य को उजड्ड घोड़े-सा दौड़ा दिया। रुकना उसे आता ही नहीं। श्रीमान्! यह भी नीति की बात है। बोलना काफ़ी नहीं, सच बोलना चाहिये।

हिप्पोलिटा : वक्तव्य ऐसे बोला जैसा बच्चा रटकर सुना गया, आवाज़ तो आई, पर समझ में कुछ न आया।

थीसियस : भाषण था कि झनझनाती जंज़ीर ! टूटी नहीं, पर कहीं एक-सी नहीं। अब आगे कौन है ?

[पाइरैमस, थिस्बी, दीवाल, चाँदनी और शेर का प्रवेश]

[वक्तव्य]

हे श्रीमान्! बहुत संभव है
अचरज करें देख यह नाटक,
पर आश्चर्य्य और भी करिये
जब तक सत्य नहीं सुलझा दे
सब रहस्य को, वह मनुष्य है
पाइरैमस, जानते आप हैं,
यह सुंदर स्त्री निश्चय थिस्बी है,
यह मनुष्य जिस पर दिखता है
लगा हुआ चूना औ' कंकड़
है दीवाल एक, यह ही है
वह दीवाल नीच जो इन दो
सुघर प्रेमियों के मिलने में
खडी बीच में बाधा बन कर।

इस दीवाल बीच है छोटा
एक छेद भी, वे बेचारे
इसमें से बातें करके ही
अपने जी को बहलाते हैं।
कोई भी इस पर ऐसा आश्चर्य न करिये !
यह मनुष्य यह लालटेन ले खड़ा हुआ जो
काँटों की झाड़ी गह, देखें इस कुत्ते के पास कौन है ?
है चाँदनी, अरे देखें तो, स्वयं चाँदनी !
पास निनस की समाधि के ये दोनों प्रेमी
वहाँ चाँदनी में मिलते थे बिना हिचक के,
और प्रेम करते थे मिल कर।
यह विशाल पशु, नाम सिंह है जिसका, इसको
देख, रात्रि में आती थी थिस्बी जब मन में
भर विश्वास, डर गई, भागी सहसा उल्टे
पाँव, किन्तु चोग़ा उसका गिर गया भूमि पर,
इसी नीच औ' हिंस्र सिंह ने
अपने मुख से, रे रुधिरार्द्र होंठ धर अपने
उस चोग़े पर रक्त लगाया।
आया पाइरैमस वह सुंदर दीर्घकाय
अति स्वस्थ तरुण जब
देखा उसने उसकी प्यारी थिस्बी का
चोग़ा धरती पर पड़ा हुआ था लोहू भींगा,
खींच भयानक रक्त पिपासु खड्ग झट उसने
अपना निर्मम,
परम वीरता से अपने खौलते वक्ष में

वहीं घुसाया,
थिस्बी वहीं पास में झुरमुट में तरुओं के
जो करती थी खड़ी प्रतीक्षा,
आई, देखा, आह ! खींच प्रिय की कटार ली
उसने अपनी छाती में ली भोंक वेग से
और ! मर गई।
अब दीवाल, चाँदनी औ' ये सिंह आदि औ' दोनों प्रेमी
खेल दिखायें।

[प्रथम वक्तव्य, पाइरैमस, थिस्बी, शेर और चाँदनी का प्रवेश]

थीसियस : अरे ! क्या कहीं यह शेर तो नहीं बोलेगा कुछ ?

डेमेट्रियस : क्या आश्चर्य्य है श्रीमान् ! जहाँ कई गधे बोलते हैं, वहाँ एक सिंह क्यों नहीं बोल सकता ?

दीवार : इस नाटक में ही यह भी आता है ऐसे,
मैं, जिसका है नाम स्नाउट, दीवाल बना हूँ,
वह दीवाल, देखिये सुनिये, जिसके तन में
एक छेद है या दरार है, जिसके द्वारा
प्रेमी पाइरैमस औ' थिस्बी बहुधा आ कर
बहुत गुप्त ढँग से कानाफूसी करते हैं।
यह चूना, कंकड़, पत्थर बतलाते हैं सब
कि हूँ वही दीवाल देखिये ! सच है मैं ही।
यह दरार है, ज़ालिम कैसी, इसमें से ही
डरे हुए प्रेमी वे दोनों बात करेंगे।

थीसियस : आप क्या चाहते हैं कि चूना और कंकड़ और अच्छा बोलें ?

डेमेट्रियस : इतनी अक्लमंद सूझ-बूझ से किया विभाजन तो मैंने कहीं

सुना ही नहीं था श्रीमान् !

थीसियस : पाइरैमस दीवाल के पास आ रहा है। सुनिये, सुनिये !

[पाइरैमस का पुनः प्रवेश]

पाइरैमस : अरो रात ! ओ रात भयंकर ! ओ री काले रंग
की काली स्याह रात री !
अरी रात ! तू जो रहती है सदा नहीं जब
दिन रहता है।
अरी रात ! ओ रात ! हाय री हाय हाय री !
मुझको डर है कहीं वचन वह
भुला गई थिस्बी क्या अपना !
ओ दीवाल ! अरी ओ प्यारी ! ओ प्यारी दीवाल,
मनोहर !
तू मेरे औ' उसके पूज्य पिता की धरती
के जो बीच खड़ी है करती हुई विभाजन !
ओ दीवाल ! भीत ओ ! प्यारी ! ओ मनहर तू !
दिखा मुझे अपनी दरार जिसमें से मैं अब
चमका सकूँ आँख यह अपनी, झाँक सकूँ कुछ !

[दीवाल उँगलियाँ उठाती है।]

धन्यवाद ! ओ करुणामय दीवाल! भरी सौजन्यों से तू,
प्रेम देवता इसके लिये करेगा तेरी रक्षा अच्छी।
हैं क्या देख रहा हूँ मैं अब ? थिस्बी आई नहीं
यहाँ पर ?
ओ दीवाल कमीनी ! तुझमें से मैं कुछ भी
देख नहीं पाता अच्छाई,
तेरे पत्थर हों अभिशप्त कि मुझको धोखा देती !

ओ दीवाल ! अधमतम है तू !

थीसियस : मेरी राय में, अगर दीवाल में अक्ल होगी तो जवाब में ज़रूर गाली देगी !

पाइरैमस : नहीं श्रीमान् ! ऐसा कैसे हो सकता है ! दीवाल क्यों बोलेगी यहाँ ? 'अधमतम है तू', के बाद तो थिस्बी को बोलना है। लीजिये वह आ गई। अब मैं उसे दीवाल के छेद में से देखूंगा। आप देखियेगा। मैंने कहा न यहाँ तो बिल्कुल वही होगा जो ठीक है। लीजिये वह आ पहुँची !

[**थिस्बी का पुनः प्रवेश**]

थिस्बी : ओ दीवाल ! न जाने तैंने यों ही रह कर
मेरी कितनी दीन कराह सुनी हैं निश्छल,
क्योंकि प्राण पाइरैमस का मुझसे होता है
वह वियोग जो, विरह रुलाता !
मेरे अधर गुलाबी जाने कितनी-कितनी
बार चूम हैं चुके कठिन तेरे ये पत्थर !
चूने में ये जड़े हुए से तेरे पत्थर !

पाइरैमस : देख रहा हूँ मैं आवाज़ एक, तो अब मैं
चलूँ छेद के पास भीत के,
एरे सुनूँ चलूँ प्यारी थिस्बी के मुख को,
थिस्बी मेरी !

थिस्बा : तुम मेरे प्रियतम हो, मेरे प्राण, ठीक क्या रही
सोच मैं !

पाइरैमस : तुम कुछ भी सोचो जो चाहो,
मैं हूँ वही तुम्हारा प्रेमी,
लाइसैन्डर सा अब भी हूँ विश्वासपात्र मैं।

थिस्बी : मैं हेलेन की भाँति रहूँगी मृत्यु, मृत्यु तक !
पाइरैमस : नहीं शैफैलुस[1] प्रोक्रुस के प्रति
था सच्चा यों,
थिस्बी : मैं प्रोक्रुस, तुम शैफैलुस के
प्रति हूँ प्रिय ज्यों !
पाइरैमस : प्रिये ! भीत की इस दरार से मुझको चूमो !
अधम भीत है !
थिस्बी : प्राण ! भीत की इस दरार को चूम रही हूँ,
नहीं तनिक भी होंठ तुम्हारे !
पाइरैमस : कहो कि निन्नी की समाधि पर मुझे मिलोगी ?
थिस्बी : जीवन मृत्यु शपथ से कहती, बिना देर के !
[**पाइरैमस और थिस्बी का प्रस्थान**]
दीवाल : मैं दीवाल कर चुकी अपना पार्ट पूर्ण अब,
यों कर चुक कर अब जाती हूँ अपने रस्ते।
[**प्रस्थान**]

थीसियस : अब पड़ोसियों के बीच की दीवाल तो गायब हो गई।
डेमेट्रियस : अब क्या चारा है श्रीमान् ! जब दीवालें भी बिना सावधान किये ही सुनने को इतने स्वेच्छाचार से काम करें।
हिप्पोलिटा : शायद मैंने इससे अधिक मूर्खता नहीं देखी।
थीसियस : नाटक तो अच्छे से अच्छा भी छाया होता है, और बुरे से बुरा भी क्या बुरा है, अगर अपनी कल्पना उसके अभावों को पूरा कर ले !
हिप्पोलिटा : तब तो शायद यह उन लोगों की नहीं, आपकी कल्पना

१. सिफैलस का बिगड़ा रूप। यह एक प्रेमी था जो पत्नी के प्रति ईमानदार रहा। अरोरा देवी भी इसे विचलित न कर सकी।

होगी ?

थीसियस : अगर हम उनके बारे में वही सोचें जो वे अपने बारे में खुद सोचते हैं, तो यह सब लाजवाब आदमी निकलेंगे ! लीजिये दो ज़ोरदार जंतु आगये, एक सिंह है, एक मनुष्य।

[**सिंह और चाँदनी का पुनः प्रवेश**]

सिंह : अहे देवियो ! आप, हृदय हैं जिनके कोमल
मोटे चूहे को निहार कर कभी फर्श पर चलते जिनको
डर लगता है। हो सकता है, काँप उठें औ' सिंहर
उठें अब।
जब गरजेगा सिंह क्रुद्ध हो बड़ी ज़ोर से।
जान लीजिये कि मैं, सिर्फ़ हूँ स्नग नामक
लुहार ही, छोटा सा हूँ शेर, नहीं सिंहनी का जाया,
यदि संगर में आऊँ यहाँ सिंह सा भीषण,
इससे बढ़ कर करुण और क्या होगा इस मेरे
जीवन में !

थीसियस : कितना विनम्र जंतु है ! और हृदय कितना पवित्र है।

डेमेट्रियस : जंतुओं में एकमात्र जंतु ! श्रीमान्, आज तक नहीं देखा !

लाइसैन्डर : वीरता में तो यह सिंह बिल्कुल लोमड़ी है।

थीसियस : बिल्कुल ! और विवेक में तो बतख़ समझिये !

डेमेट्रियस : नहीं श्रीमान्! इसकी वीरता विवेक को नहीं ले जा सकती। और लोमड़ी बतख़ को उठा ले जाती है।

थीसियस : इसका विवेक, मुझे निश्चय है इसकी वीरता को नहीं उठा सकता, क्योंकि बतख़ लोमड़ी को नहीं उठा सकती। छोड़िये, इसे इसके ही विवेक पर डालिये ! अब जरा चाँद की बात सुनिये।

चाँदनी : लालटेन यह नोंकदार चंदा की प्रतिनिधि—

डेमेट्रियस : इसको सिर पर सींग पहन कर आना चाहिये था।

थीसियस : वह नया चाँद नहीं, उसके सींग भीतर घुस गये हैं उसकी गोलाई में।

चाँदनी : लालटेन यह नोंकदार चंदा की प्रतिनिधि
और चाँद के भीतर का मैं मनुज स्वयं हूँ !

थीसियस : यह तो सबसे बड़ी गलती हो गई। इस आदमी को तो इस लालटैन के भीतर रखना चाहिये। वर्ना फिर यह चाँद के भीतर कहाँ है ?

डेमेट्रियस : श्रीमान् ! वहाँ जाने की तो वह हिम्मत भी करेगा ! मोमबत्ती जल रही है वहाँ। वैसे है तो यह मामला बुझता हुआ ही।

हिप्पोलिटा : मैं इस चाँद से ऊब गई हूँ। काश यह बदल जाता ! कुछ करे तो !

थीसियस : ऐसा लगता है, यह जो इसमें विवेक या स्वेच्छा की ज्योति इतनी कम है, यह ढल रहा है। लेकिन फिर भी, दाक्षिण्य के कारण, हमें रुकना ही चाहिये।

लाइसैन्डर : हाँ चाँद ! आगे बोलो !

चाँदनी : मुझे आपसे जो कहना है, वह सिर्फ़ यही है कि लालटैन चाँद है, और मैं इस चाँद के भीतर का आदमी हूँ; यह झाड़ी काँटीली है, यह मेरी झाडी है, और यह कुत्ता मेरा कुत्ता है।

डेमेट्रियस : लेकिन यह सब तो लालटैन के भीतर रहने चाहिये। क्योंकि यह सब चाँद में हैं। लीजिये। खामोशी से सुनिये। आ रही है थिस्बी ?

[**थिस्बी का पुनः प्रवेश**]

थिस्बी : यही पुरानी निन्नी की समाधि है, मेरा
प्रिय न यहाँ क्या आया अब तक ?

सिंह : (गरज कर) ओह···

[थिस्बी भागती है।]

डेमेट्रियस : खूब गरजा ! शाबाश शेर !

हिप्पोलिटा खूब चमके चाँद ! सचमुच ? क्या नज़ाकत से चाँद चमक रहा है !

[शेर थिस्बी के चोग़े को झिझोड़ कर चला जाता है।]

थीसियस : क्या चूहे की तरह फाड़ा है बिल्ली जैसे शेर ने !

डेमेट्रियस : फिर आ गया पाइरैमस !

लाइसैन्डर : लिहाज़ा शेर हो गया गायब !

[पाइरैमस का पुनः प्रवेश]

पाइरैमस : मधुर चन्द्र ! तेरी इन सूरज सी किरणों के
कारण तुझको
धन्यवाद देता हूँ प्यारे, क्योंकि इस समय
चमक रहा तू खूब, क्योंकि मैं आशा करता
तेरी स्वर्णिम चमकदार दीपित किरणों की
स्निग्ध ज्योति में, देख सकूँगा
थिस्बी के वास्तविक रूप को !
किंतु अरे दुर्भाग्य ! ठहर जा !
आह चिन्ह ! वह क्या है कह जा !
कैसा यह हतभाग अरे क्या ?
देखो नयन ! देखते हो क्या ?
कैसे हो सकता है यह सब ?
मेरी प्यारी ! ओ स्वादिष्ट बतख़ ! ओ प्यारी !
तेरा चोग़ा, प्यारा चोग़ा !
रँगा रक्त से तेरा चोग़ा !

अरी क्रूर देवियो ! टूट कर
मेरे सिर पर गिरो रोर भर !
सर्वनाश कर दो तुम आओ !
शांत-शांत कर ध्वंस मचाओ !

थीसियस : यह वेदना, यह प्रिया की मृत्यु, यह दुखद अंत तो किसी भी मनुष्य को उदास दिखा सकती थी !

हिप्पोलिटा :धिक् है मेरे हृदय को । मुझे इस पर दया आती है ।

पाइरैमस : अरी प्रकृति ! क्यों बता किया है तूने कह तो
सिहों का निर्माण भला इस बसुन्धरा पर ?
आह अधम है सिंह कि उसने मेरी प्रेयसि
थिस्बी को मारा है ऐसे
मेरी थिस्बी···सकल लोक में सकल काल में
सर्व श्रेष्ठ सुंदरी, नहीं, हाँ, थी सचमुच ही,
वह रहती थी, और प्यार करती थी, थी वह
चाहा करती,
और प्रसन्न रहा करती थी ।
आओ अश्रु नयन यह भर दो,
निकलो खड्ग, घाव अब कर दो,
पाइरैमस की छाती फाड़ो ।
बाँई छाती में घुस जाओ,
जहाँ धड़कता दिल घुस जाओ···

[खड्ग मार लेता है ।]

अब मरता हूँ·····ऐसे·····ऐसे·····
अरे मर गया·····
अरे उड गया·····

मेरी आत्मा का चेतन तो नील गगन में
ओ जिह्वा···खोदे प्रकाश निज·····
चंद्र ! भाग जा ! रस्ता ले निज·····

[चाँदनी का प्रस्थान]

अब मरता हूँ, मरता हूँ मैं मरता···मरता·····
मरता·····मर···मर···

[मृत्यु]

डेमेट्रियस : अभी नहीं मरा है। शर्त्त है इक्के की चोट ! अभी दम है !

लाइसैन्डर : इक्के से उतर कर बोलो ! वह तो मर गया। अब वह नहीं है।

थीसियस : नहीं, शायद चिकित्सक की सहायता से यह भी बच सकता है। और गधा प्रमाणित हो सकता है।

हिप्पोलिटा : यह क्या हुआ ? चाँदनी कैसे लौट गई ? अभी थिस्बी तो आई ही नहीं, अभी उसे उसका प्रियतम मिला ही कहाँ है ?

थीसियस : वह उसे तारों की रोशनी में ढूँढ लेगी। वह आ गई और उसके उद्वेग के साथ नाटक भी समाप्त हो जायेगा।

[थिस्बी का पुनः प्रवेश]

हिप्पोलिटा : मुझे लगता है इसका भाषण ऐसे पाइरैमस के लिये ज़्यादा लंबा न होगा। यह तो जल्दी ख़त्म कर देगी !

डेमेट्रियस : धूल का एक ज़र्रा तराज़ू के दोनों पलड़े बराबर किये देता है। कौन पाइरैमस कि थिस्बी, कौन किससे कम है ? वह पुरुष है, भगवान बचाये, यह स्त्री है, भगवान रक्षा करे ?

लाइसैन्डर : उसने अपनी सुंदर आँखों से उसे देख भी लिया।

डेमेट्रियस : मतलब यह कि अब वह बोलेगी—

थिस्बी : प्रियतम सोते हो क्या बोलो ?

या मृत हो प्रिय ! कुछ तो डोलो !
जागो हे पाइरैमस जागो !
बोलो बोलो ! हुए मूक तुम ?
हाय मर गये ! बिल्कुल ही तुम ?
ओ समाधि मेरे प्रियतम की
प्यारी प्यारी आँखें ढाँको !
हाय फूल से होंठ तुम्हारे,
और नासिका ज्यों कलिका रे !
शुभ्र कुसुम सी वदन विभा ओ !
गये गये सब हाय खो गये,
आह प्रेमियो ! हृदय फट गये,
नयन तुम्हारे नयी प्याज़ की
हरी गाँठ से थे, मत जाओ !
अहे भाग्य की क्रूर देवियो
दुग्ध श्वेत कर लेकर आओ
शोणित में अब हाथ डुबाओ
क्योंकि तुम्हीं ने तो इसके रेशम का डोरा
है फाड़ा ओ !
जिह्वा ! शब्द न बोल एक भी
ओ विश्वस्त, खड्ग अब जल्दी,
आ मेरी छाती में तुम तो
जल्दी से घुस जाओ ।

[खड्ग मार लेती है ।]

बिदा अलविदा मीत बिदा लो,
यों थिस्बी मरती है देखो,

बिदा, बिदा दो, बिदा, बिदा ओ !

[मृत्यु]

थीसियस : अब चाँदनी और शेर रह गये मुर्दों को गाड़ने को।

डेमेट्रियस : जी हाँ। दीवाल भी तो है।

बौटम : (उठ कर) नहीं। मैं विश्वास दिलाता हूँ जिस दीवाल ने उनके पिताओं को अलग किया था वह गिर चुकी है। क्या आप अंतिम वक्तव्य भी सुनना पसंद करेंगे या हमारी मंडली के दो मनुष्यों का अब नृत्य देखना चाहेंगे ?

थीसियस : नहीं अंतिम वक्तव्य तो रहने ही दो। तुम्हारे खेल में किसी तरह की क्षमा माँगने की आवश्यकता ही नहीं है, क्षमा क्या होगी ? सारे पात्र तो मर गये, अब दोष किसे दिया जाये, सचमुच जिसने भी यह नाटक लिखा है, यदि वह पाइरैमस बनता और थिस्बी के जूते के फ़ीते से फाँसी लगाकर मर जाता तो बड़ी ज़ोर का दुःखांत नाटक बनता। और वैसे है यह ज़ोर का ही। भई, खूब किया ! अब वह नृत्य शुरू करो ! वह अंतिम वक्तव्य तो छोड़ो !

[नृत्य]

अर्द्धरात्रि के लौह जिह्व ने बजा दिये हैं बारह अबतो,
चलो प्रेमियो ! अब शैय्या पर,
अब परियों का समय होगया।
मुझको डर है कहीं भोर में सोना पड़े न धूप
चढ़े तक !
कितनी देर हो गई देखो रात जागते !
गोचर ही में स्थूल रूप इस नाटक ने भी
कितनी भारी रात अरे यों ही ठग ली ये,

प्यारे मित्रो ! चलो चलें अब हम सब सोने,
एक पक्ष तक नित्य यही आनंद हर्ष उत्सव हों मनहर,
हम आनंद मनायें तन्मय !

[सबका प्रस्थान]

[एक का प्रवेश]

एक : गरज रहा है भूखा सिंह,
वृक रोता है चंद्र निहार,
सोता खर्राटे भर शांत
दिन भर के सब करके काम
थका किसान छोड़ सब भार !
उठती हैं फिर चमक अबूझ
जलो काठ से लपट अभूत,
उल्लू बोल रहा है गूंज
और दीन वह जो भयभीत
दुख में रोता है अनबूझ
उसे शवों की स्मृति की भीति !
यही रात की वह है बेला
कब्रें जिसमें मुँह को खोल,
लेती है जमुहाई लंबी
छायाएँ जाती हैं डोल !
गिरजेघर के सूने पथ पर
चलती हैं छायाएँ और
हम परियाँ आत्याएँ जो हैं
रवि किरणों से अपनी ठौर
दूर बनाते अन्धकार के

स्वप्नों से चलते हैं झूम
इसी समय करते हैं क्रीड़ा,
यही समय है रिमझिम झूम !
चूहा तक न यहाँ पर आये
इस घर की न शांति को खोये
इसीलिये झाड़ू देने को
मैं हूँ भेजा गया यहाँ पर !
कूड़ा करकट सभी सँवार
धर दूं पीछे यह है द्वार।

[ओबेरोन और टिटानिया का सेवकों के साथ प्रवेश]

ओबेरोन : इस घर में झिलमिल कोई रोशनी जलाओ,
सुप्त अग्नि को थोड़ा सा ऊपर उकसाओ,
परी परी, आत्मा आत्मा अब सुख से खेलो
झाड़ी पर के विहग बनो तुम चहको डोलो।
गाओ गाओ गीत मधुर तुम मीठे स्वर से,
नाचो नाचो अपने सारे आलस तज के।

टिटानिया : पहले अपना गान सुनाओ हमको प्रियतम,
सीखें उसके मीठे चरणों को हम निरुपम,
फिर हाथों में हाथ प्रेम से उलझायेंगे
और नाचते हुए एक स्वर से गायेंगे।

[नृत्य और गीत]

ओबेरोन : अब प्रभात तक इस प्रकोष्ठ से
परी और आत्माएँ सारी करें पलायन,
हम भी सुख शैया पर जायें और प्रेम से
जा कर सोयें,